Digitized by eGangotri

३११७८।

224

नए ज्ञान की नई कथाएँ

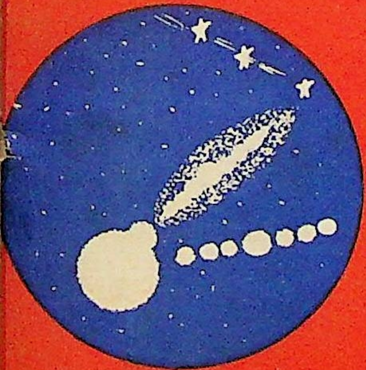

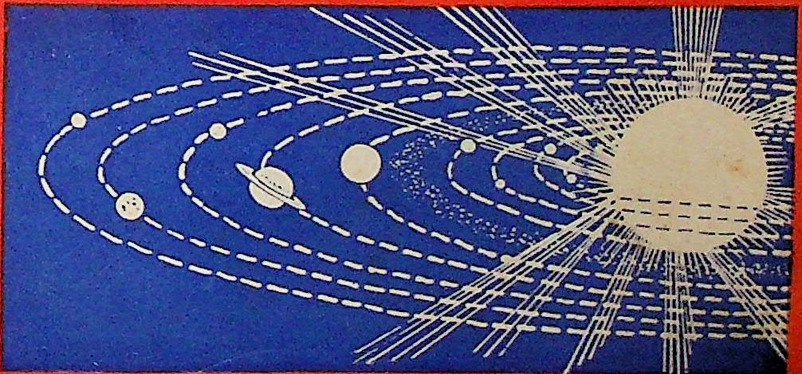

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

386
A154

नए ज्ञान की नई कथाएँ

लेखक
श्रीव्यथितहृदय

स्कैन्ड/Scanned

प्रकाशक :
आर्य बुक डिपो,
३०, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

NAYE GYAN KI NAI KATHAEN

by

SHRI VYATHIT HRIDAYA

Acc. No. 29221
Cost Rs. 2.00
Date 8.6.68

Sri Pratap Singh Library Srinagar

H831
S67N
V98N

© १९६५, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली-५

प्रकाशक : आर्य बुक डिपो,
करौल बाग, नई दिल्ली-५
मूल्य : दो रुपए (रु० २.०० पै०)
मुद्रक : युगान्तर प्रेस, मोरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी बात

क्या यह कहूँ, कि 'नए ज्ञान की नई कथाएँ' छोटे-छोटे बालकों के लिए हैं ! मेरी प्रार्थना तो केवल इतनी है, कि आप इसे पढ़ें, और यदि उचित लगे, तो स्वयं यह कहें, कि 'नए ज्ञान की नई कथाएँ' की रचना सचमुच छोटे-छोटे बालकों के लिए हुई है।

आपके इस कथन को ही मैं अपनी सफलता मानूँगा ।

—श्रीव्यथितहृदय

ए-२६, कैलाश कालोनी,
नई दिल्ली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुक्रम

		पृष्ठ
१.	भगवान के घर दीये जल रहे हैं	५
२.	अरे ! कोई महान् पुरुष चल बसा	११
३.	अब तो दुनिया में प्रलय हो जाएगी	१६
४.	सूर्य का रथ	२०
५.	चन्दा मामा	२४
६.	बुढ़िया का चर्खा	२८
७.	क्षय-रोगी चन्द्रमा	३३
८.	देवताओं की नदी	३७
९.	राहु और केतु की कहानी	४१
१०.	यह तो शेषनाग ने साँस ली है	४६
११.	इन्द्र का वज्र	५१
१२.	इन्द्र का कोप	५६
१३.	भगवान का धनुष	६१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: १ :

भगवान के घर दीये जल रहे हैं !

"वे क्या हैं ?"—मास्टरजी ने आकाश की ओर, अँगुली से दिखाकर प्रश्न किया।

सभी विद्यार्थी, आकाश की ओर देखने लगे। आकाश में तारे झिल-मिला रहे थे।

रामदरश बोल उठा—"भगवान के घर दीये जल रहे हैं !"

सभी विद्यार्थी आश्चर्य से रामदरश की ओर निहार उठे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टरजी ने एक बार विद्यार्थियों पर दृष्टि डाली, और फिर कहा—"नहीं, वे भगवान के घर के दीये नहीं, तारे हैं।"

किशोर बोल उठा—"हाँ, तारे तो हैं, पर भगवान के घर के दीये हैं।"

मास्टरजी बोले—"नहीं, वे केवल तारे हैं। क्या दीये कभी दिन में भी जलते हैं?"

रामदरश ने उत्तर दिया—"नहीं, दीये दिन में नहीं जलते।"

मास्टरजी ने कहा—"पर तारे दिन में भी जलते हैं।"

सभी विद्यार्थी आँखों में आश्चर्य भरकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

मनोहर बोल उठा—"हाँ, सचमुच तारे दिन में भी जलते हैं। एक बार सूर्य-ग्रहण लगा था। दिन में ही अँधेरा छा गया था। आश्चर्य! दिन में ही तारे दिखाई पड़ रहे थे।"

सभी विद्यार्थी आश्चर्य में डूब-से गए।

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, यह सत्य है। जब भी कभी सूर्य-ग्रहण लगे, और दिन में अँधेरा हो जाए, तो आकाश में चमकते हुए तारों को देखा जा सकता है।"

किशोर ने उत्सुकता के साथ प्रश्न किया—"तारे जब दिन में भी जलते हैं, तो वे दिन में क्यों नहीं दिखाई पड़ते?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"क्या तेज़ रोशनी में ऐसी चीज़ की रोशनी दिखाई पड़ सकती है, जिसकी चमक उससे बहुत कम है? दिन में सूर्य का प्रकाश रहता है। सूर्य के प्रकाश में, तारों की ज्योति से कहीं अधिक चमक होती है। तारे दिन में सूर्य के प्रकाश से छिप जाते हैं।"

सुखवीर बोल उठा—"ठीक ही है, भला तारे सूर्य के सामने कैसे दिखाई पड़ सकते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टरजी ने कहा—"पर यह सोचना ठीक नहीं है, कि तारों में सूर्य से कम चमक होती है। तुम सब लोगों को यह सुनकर आश्चर्य ही होगा, कि कुछ तारे ऐसे हैं, जो सूर्य से भी बड़े हैं, और उनमें चमक भी सूर्य से अधिक है।"

किशोर ने प्रश्न किया—"फिर वे तारे दिन में क्यों नहीं दिखाई पड़ते ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"इसका कारण यह है, कि वे तारे हमसे सूर्य की अपेक्षा बहुत दूर हैं। इतनी दूर हैं, कि उनकी चमक हमें बहुत ही मन्द-मन्द और धुँधली दिखाई पड़ती है। सूर्य उन तारों के मुकाबिले में हमारे बहुत निकटहै। यही कारण है, कि सूर्य के प्रकाश को हम अच्छी तरह देख पाते हैं। यदि कहीं वे तारे भी सूर्य के पास ही होते तो तुम्हें आकाश में करोड़ों सूर्य एक साथ ही चमकते हुए दिखाई पड़ते।"

सुखवीर बोल उठा—"तब तो फिर शायद धरती पर रहना ही मुश्किल हो जाता। क्योंकि फिर तो चारों ओर इतनी चमक फैलती कि आँखों को सदा बन्द ही रखना पड़ता।"

रामदरश ने कहा—"और यह भी क्यों नहीं कहते, कि फिर तो इतनी गर्मी पड़ती, कि पशु, पक्षी, मनुष्य—सबका जीना हराम हो जाता।"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, बात तो ठीक ही है। पर हर्ष की बात ही है, कि ऐसा हो नहीं सकता। क्योंकि तारे हमारी धरती से बहुत दूर हैं—बहुत दूर हैं। तारों की दूरी आश्चर्य में डुबो देने वाली चीज़ है।"

मनोहर ने आश्चर्य के साथ प्रश्न किया—"क्या तारों की दूरी का ठीक-ठीक पता लगाया गया है ?"

मास्टरजी ने बतलाया—"संसार में ऐसी कौन-सी चीज़ है, जिसको जानने और समझने का प्रयास मनुष्य ने नहीं किया हो ? मनुष्य हज़ारों वर्षों से आकाश और आकाश के तारों के बारे में जानने का प्रयत्न करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चला आ रहा है। मनुष्य ने अपने प्रयत्न से ही तारों की दूरी का भी पता लगा लिया है। पर तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा, कि तारे हमारी धरती से इतनी दूर हैं कि उनकी दूरी गिनती में नहीं बताई जा सकती। सच बात तो यह है कि तारों की दूरी को बताने के लिए गिनती है ही नहीं।"

किशोर ने उत्कंठा के साथ पूछा—"फिर लोग तारों की दूरी को किस तरह बताते हैं ?"

मास्टरजी ने बतलाया—"प्रकाश की गति के द्वारा। लोगों ने पता लगाया है, कि प्रकाश एक सैकिण्ड में १ लाख ८६ हज़ार मील दूर जाता है। लोगों ने यह भी मालूम किया है, कि सूर्य के प्रकाश को हमारी धरती तक पहुँचने में सवा आठ मिनट का समय लगता है। अब क्या तुममें से कोई यह बता सकता है, कि सूर्य हमारी पृथ्वी से कितने मील दूर है ?"

पर कोई कुछ भी उत्तर न दे सका। सब के सब केवल एक-दूसरे के मुँह की ओर देखकर रह गए।

मास्टरजी ने कहा—"अच्छा, मैं बताता हूँ। प्रकाश की चाल एक सैकिण्ड में १ लाख ८६ हज़ार मील है, और सूर्य के प्रकाश को हमारी पृथ्वी तक पहुँचने में सवा आठ मिनट का समय लगता है। सवा आठ मिनट के सैकिण्ड बनाकर १ लाख ८६ हज़ार में गुणा कर दो। बस, तुम्हें सूर्य की दूरी मालूम हो जाएगी।"

रामदरश ने प्रश्न किया—"आप को तो दूरी मालूम होगी। फिर बता न दीजिए, कि सूर्य पृथ्वी से कितने मील दूर है ?"

मास्टरजी ने बतलाया—"सूर्य पृथ्वी से सवा नौ करोड़ मील दूर है।"

किशोर बोल उठा—"पर तारे की बात तो रह ही गई ?"

मास्टरजी ने कहा—"नहीं, अब तारों की भी दूरी सुनो। लोगों ने जाँच-पड़ताल करके पता लगाया है, कि सूर्य के बाद जो तारा हमारी पृथ्वी के निकट है, उसके प्रकाश को हमारी धरती तक पहुँचने में सवा ४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वर्ष का समय लगता है। अब ज़रा सवा चार वर्ष के सैकिण्ड बनाकर १ लाख ८६ हज़ार में गुणा तो करो। क्या तुम गुणनफल को गिनती में बता सकते हो ? नहीं, उसे प्रकट करने में गिनती ही खतम हो जाएगी। यह उस तारे की दूरी का हाल है, जिसके प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में सवा चार वर्ष का समय लगता है। पर ऐसे भी तारे हैं, जिनके प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में छः और आठ वर्ष तक का समय लग जाता है। अब तुम स्वयं सोच सकते हो, कि वे तारे हमारी पृथ्वी से कितने मील दूर हैं। फिर यदि वे हमें छोटे, और धुँधले दिखाई दें तो आश्चर्य की क्या बात है ! इसमें भी कुछ आश्चर्य की बात नहीं, कि बहुत-से तारों को हम देख ही न सकते हों।"

मनोहर ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"हम जितने तारों को देख पाते हैं, क्या उनके अलावा आकाश में और भी तारे हैं ?"

मास्टरजी ने बतलाया—"हाँ, यदि तुम दूरबीन लगाकर देखो, तो तुम्हें आकाश में अगणित ऐसे तारे दिखाई पड़ेंगे, जिन्हें तुम आँख से नहीं देख सकते थे। क्या तुम सबने इन सभी तारों के प्रकाश को कभी ध्यान से देखा है ?"

सुखवीर बोल उठा—"हाँ, देखा है ! कोई लाल, कोई पीला, कोई सफेद और कोई नीला। बड़ा अनोखा रंग होता है। मन में आता है, कि मैं रात भर तारों की जगमग-जगमग करती हुई ज्योति को देखता ही रहूँ।"

किशोर ने सोचते-सोचते कहा—"हाँ, तारों की ज्योति अच्छी तो लगती है, पर यह समझ में नहीं आता कि किसी का रंग लाल, किसी का सफेद, किसी का पीला और किसी का कुछ नीला क्यों होता है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"क्या तुम लोगों ने लोहार की भट्टी में गरम होते हुए लोहे को देखा है ? यदि हाँ, तो यह बात तुम लोगों को मालूम होगी, कि लोहा जब भट्टी में गरम किया जाता है, तो पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसका रंग लाल होता है। लेकिन, जब वह और अधिक गरम हो जाता है, तो उसका रंग बदल कर कुछ पीला हो जाता है। उससे भी अधिक गरम होने पर उसका रंग सफेद हो जाता है। इससे यह बात तुम सबकी समझ में आ गई होगी कि किसी पदार्थ का रंग ताप से बदल जाता है। जो तारे लाल रंग के दिखाई पड़ते हैं, उनमें ताप कम है। पीले रंग के तारों में लाल रंग के तारों से अधिक ताप है। सफेद रंग के तारे उनसे भी अधिक ताप वाले हैं। नीले रंग के तारों में तो सबसे अधिक ताप होता है।"

मास्टरजी की बात सुनकर सभी विद्यार्थी तारों के बारे में मन ही मन सोच-विचार करने लगे।

कुछ देर के बाद भी जब किसी ने कुछ प्रश्न न किया, तो मास्टरजी ने कहा—"जान पड़ता है, अब तुम सबके पास तारों के बारे में पूछने को कुछ भी नहीं है, और अब छुट्टी का समय भी हो गया है।"

सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी पुस्तक लेकर अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े।

पर उनके मन में तारों की बात थी—केवल तारों की बात थी। उन्हें ऐसा भी लग रहा था, जैसे मास्टरजी ने तारों की बात बता कर उन्हें बहुत बड़ा ज्ञान दे दिया हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: २ :

अरे ! कोई महान् पुरुष चल बसा

संध्या बीत चुकी थी। आकाश में तारे झिलमिला रहे थे। रामदरश हाथ में अपनी किताब लेकर पढ़ने के लिए जा रहा था।

सहसा आकाश में एक तारा टूटा, और वह अपनी लकीर बनाता हुआ बड़ी दूर तक निकल गया।

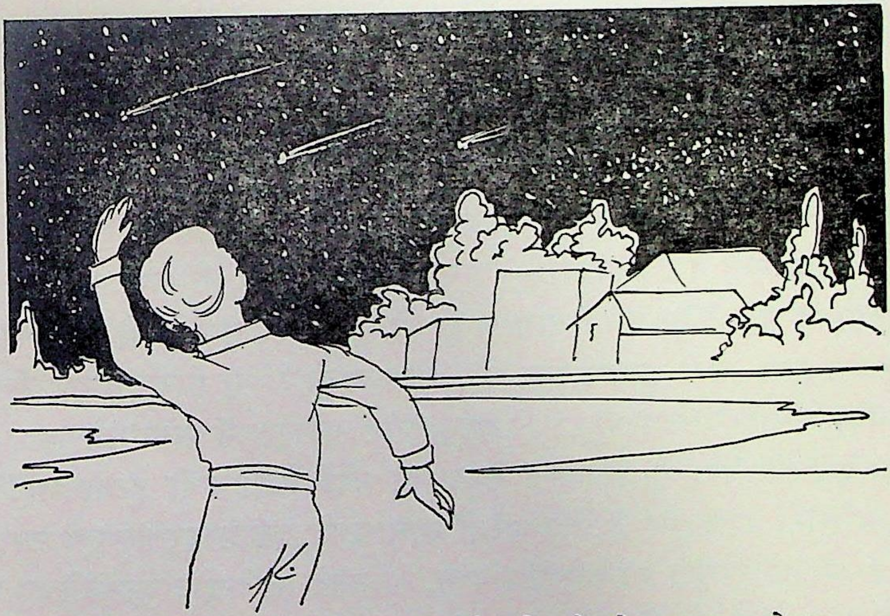

रामदरश चकित होकर आकाश की ओर देखने लगा। ऐसा लगा, जैसे तारे के टूटने से उसका मन बहुत बड़े दुःख से भर गया हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पाठघर में पहुँचते ही वह बोल उठा—"मास्टर साहब ! जान पड़ता है, आज कोई महान् पुरुष संसार से चल बसा।"

सभी विद्यार्थी आँखों में आश्चर्य भरकर रामदरश की ओर देखने लगे।

मास्टरजी ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ?"

रामदरश ने उत्तर दिया—"अभी-अभी मैंने आकाश में एक बहुत-बड़े तारे को टूटते हुए देखा है। जब कोई महान् पुरुष संसार से चल बसता है, तभी ऐसा तारा टूटता है।"

किशोर बोल उठा—"हाँ, मास्टर साहब ! सचमुच रामदरश ठीक कह रहा है। कई साल पहले की बात है। एक दिन मैंने भी रात में एक बहुत बड़े तारे को टूटते हुए देखा था। सवेरे पता लगा, कि गाँव के ज़मींदार साहब चल बसे।"

मास्टर साहब विचारों में डूब गए। कुछ देर तक मन ही मन सोचते रहे, फिर बोल उठे—"नहीं, यह बात ठीक नहीं। तारे के टूटने का किसी महान् पुरुष की मृत्यु से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

सुखवीर ने प्रश्न किया—"फिर आप ही बतायें, तारे क्यों टूटते हैं ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"अगर सच-सच पूछो, तो कभी कोई तारा टूटता ही नहीं ! तुम स्वयं सोच सकते हो, कि अगर सूर्य से भी बड़ा कोई जलता हुआ तारा टूटकर गिर पड़े, तो क्या हो ? यह सारा संसार हिल जाये, धरती में उलट-पुलट हो जाए, और आकाश में प्रलय मच जाए। पर हर्ष की बात है, कि इस तरह का कोई तारा कभी टूटता नहीं। कुछ लोगों का कहना है, कि अरबों साल पहले इस प्रकार का एक तारा टूटा था; और उसी का परिणाम हुआ, कि उसके छोटे-छोटे टुकड़ों से बहुत-सी चीज़ें पैदा हुईं, जिनमें हमारी पृथ्वी, चन्द्रमा और ग्रह आदि भी हैं।"

रामदरश को बड़ा आश्चर्य-सा लगा। उसने विस्मय के साथ पूछा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"क्या तारा इतना बड़ा होता है, कि उसके टुकड़ों से पृथ्वी और चन्द्रमा आदि बन सकते हैं ?"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, सचमुच तारा बहुत-बड़ा होता है। इतना बड़ा होता है, कि हम और तुम उसका अनुमान नहीं लगा सकते। यदि कोई एक बहुत-बड़ा तारा टूट कर गिर जाए, तो सच मानो, तुम्हारी पृथ्वी जल कर राख हो जाए।"

कैलाश बोल उठा—"ठीक है, तारा नहीं टूटता ; फिर वह क्या चीज़ है, जो रात में आकाश के ऊपर आतिशबाज़ी की तरह छूटती हुई दिखाई पड़ती है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"इस बात को समझने के लिए तुम्हें पहले 'सूर्य परिवार' को समझना होगा। जिस तरह तुम सबका परिवार है, उसी तरह सूर्य का अपना परिवार है। सूर्य के परिवार में मुख्य रूप से नौ सदस्य हैं, जिनके नाम इस तरह हैं—बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, वारुणी, वरुण, पृथ्वी, और यम। इन्हीं को लोग नौ ग्रह भी कहते हैं। ये सब दिन-रात सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं। इनके अलावा और भी छोटे-छोटे ग्रह, उपग्रह, और लाखों-करोड़ों छोटे-छोटे तारे सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते ही रहते हैं।"

किशोर बीच में ही बोल उठा—"पर इनमें से कभी कोई सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता हुआ दिखाई तो नहीं पड़ता ?"

मास्टरजी ने कहा—"दिखाई कैसे पड़े ? एक तो ये सब ग्रह और तारे हमारी पृथ्वी से बहुत दूर हैं, और दूसरे सूर्य का जलता हुआ तेज प्रकाश है। आकाश में जो कुछ होता है, उसे तुम सूर्य के प्रकाश में कैसे देख सकते हो ? एक ही ग्रह ऐसा है, जिसे तुम देख सकते हो। वह है तुम्हारी पृथ्वी। दूसरे ग्रहों की तरह तुम्हारी पृथ्वी भी दिन-रात सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। पर उसका घुमाव तुम्हें मालूम नहीं हो सकता, क्योंकि तुम उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर रहते हो।"

मनोहर ने प्रश्न किया—"पर यह बात तो अभी समझ में नहीं आई, कि 'तारों का टूटना' क्या चीज़ है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"उसी बात को बताने के लिए तो 'सूर्य परिवार' की चर्चा चलाई है। हाँ, तो सूर्य के चारों ओर सभी ग्रह, उपग्रह, छोटे-छोटे ग्रह, और लाखों-करोड़ों तारे दिन-रात घूमते रहते हैं। तारे दो तरह के होते हैं। एक तो सच्चे तारे हैं, जो सूर्य से बहुत दूर हैं, और दूसरे छोटे-छोटे करोड़ों पिण्ड हैं। यही अपनी कक्षा में सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। इनमें कुछ तो राई के दानों की तरह बहुत छोटे-छोटे होते हैं और कुछ कई मन के बहुत बड़े-बड़े होते हैं। हमारी पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती हुई, जब इन तारों की कक्षा में प्रवेश करती है, तब पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के कारण कुछ तारे ज़ोर से पृथ्वी की ओर खिंच उठते हैं। यही खिंचते हुए तारे हमें-तुम्हें दिखाई पड़ते हैं, और हम सब इन्हीं को 'तारों का टूटना' कहते हैं।"

रामदरश बोल उठा—"आश्चर्य है ! पृथ्वी उन तारों को इतने ज़ोर से खींचती है, कि उन पर दृष्टि भी नहीं ठहरती !"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, वे तारे बड़ी तेजी के साथ पृथ्वी की ओर खिंच उठते हैं। लोगों का कहना है कि उन खिंचते हुए तारों की चाल एक सैकिण्ड में ३० मील होती है।"

किशोर ने प्रश्न किया—"वे तारे जब खिंचकर पृथ्वी की ओर आते हैं, तो बीच में कहाँ गायब हो जाते हैं ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"वे जब पृथ्वी की ओर खिंचते हुए, आकाश के नीचे वायुमण्डल में आते हैं, तो उनकी हवा से रगड़ होती है। हवा से रगड़ होते ही वे जल उठते हैं, और कुछ ही सैकिण्डों में राख हो जाते हैं।"

सुखवीर बोल उठा—"तब तो वह राख पृथ्वी पर अवश्य गिरती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होगी ?"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, ऐसे करोड़ों जले हुए तारों की, जिन्हें उल्का कहते हैं, राख रोज़ पृथ्वी पर गिरती है। पर कभी-कभी ऐसी उल्काएँ भी पृथ्वी पर गिरती हैं, जो पूरी तरह से नहीं जली होतीं। जब कभी ऐसी कोई उल्का गिरती है तो उससे बड़ा नुकसान होता है।"

कैलाश ने उत्कंठा से पूछा—"क्या कभी इस प्रकार की कोई उल्का कहीं गिरी है, और लोगों ने उसे देखा है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"हाँ, इस प्रकार एक अध-जली उल्का १९०८ ई० में रूस में गिरी थी। उसका वज़न लगभग ३५०० मन था। उसके गिरने के समय आकाश काँप उठा था। आकाश के चारों ओर ललाई छा गई थी। पृथ्वी में गहरे झटके पैदा हो उठे थे। ऐसा लग रहा था, मानो भूडोल आ गया हो। जिस जगह वह उल्का गिरी थी, उसके चारों ओर ५० मील तक सब कुछ जलकर राख हो गया था। ७० मील दूर तक, किसी भी गाँव में कोई मकान गिरने से बाकी न बचा था। बहुत दिनों पहले इसी प्रकार की एक उल्का अमेरिका के एरिज़ोना प्रदेश में गिरी थी। जिस जगह वह गिरी थी, आज भी वहाँ ५ सौ फुट गहरा और ४ हज़ार फुट चौड़ा खड्ड मौजूद है।"

रामदरश बोल उठा—"तब तो भगवान करे, इस प्रकार की उल्का कहीं न गिरे।"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, सचमुच कहीं न गिरे। क्योंकि इस प्रकार की उल्का गिरने से धन-जन—दोनों का बड़ा नुकसान होता है।"

विद्यार्थियों में सन्नाटा-सा छा गया। ऐसा लगा, मानो उल्कापात ने उन्हें डरा दिया हो !!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ३ :

अब तो दुनिया में प्रलय हो जाएगी

कई दिनों से एक तारे की चर्चा चल रही थी। जिसे देखो, वही उस तारे की चर्चा करता—पूँछ वाला तारा! बड़ा भयानक तारा! ज़रूर, ज़रूर अब दुनिया में प्रलय हो जाएगी।

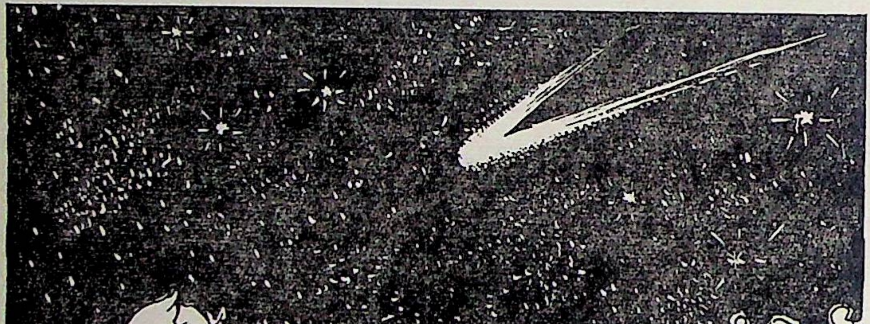

लोग उस तारे की चर्चा करते हुए भय से काँप जाते थे। ऐसा लगता था, मानो वह तारा प्रलय का संदेश ही लेकर रोज़ दिखाई पड़ रहा हो।

पर वह है क्या? रामदरश के मन में यह सवाल पैदा हो उठा। क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने पाठघर में तारों के बारे में नई-नई बातें सीखी थीं। हो सकता है, इस पूँछ वाले तारे के बारे में भी, उसके मास्टरजी उसे कोई नई बात बतायें।

अतः संध्या के बाद जब वह पाठघर पहुँचा, तब उसने पहुँचते ही पूँछ वाले तारे के विषय में बात छेड़ दी।

रामदरश का चर्चा चलाना था नहीं, कि कई विद्यार्थी एक साथ ही बोल उठे—"हाँ, मास्टर साहब ! आज-कल कई दिनों से एक पूँछ वाला तारा दिखाई पड़ता है। लोग कहते हैं कि अब दुनिया में प्रलय हो जाएगी।"

मास्टर साहब ने सबको शांत करते हुए कहा—"हाँ, मैंने भी पूँछ वाले तारे को देखा है। लोगों को यह कहते हुए भी सुना है, कि अब दुनिया में प्रलय हो जायेगी। पर यह सब झूठ है। पूँछ वाले तारे से दुनिया की प्रलय का कोई वास्ता नहीं है।"

कैलाश ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"फिर सब लोग जो कह रहे हैं, क्या वह झूठ है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"हाँ, बिल्कुल झूठ है। तुम सब पूछ सकते हो, कि क्यों झूठ है ? इसका उत्तर यह है, कि इसके पहले भी कई बार पूँछ वाला तारा दिखाई पड़ा था, और जब दिखाई पड़ा था तो लोगों ने यही कहा था, कि दुनिया में प्रलय हो जाएगी। पर तुम सब देख ही रहे हो, कि उस तारे के दिखाई देने के बाद भी दुनिया ज्यों-की-त्यों चली आ रही है।"

रामदरश बोल उठा—"क्या आप बता सकते हैं, कि पूँछ वाला तारा कब दिखाई पड़ा था ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"यों तो पूँछ वाला तारा कई बार दिखाई पड़ चुका है। पर १९१० ई० में जो पूँछ वाला तारा दिखाई पड़ा था, वह बहुत बड़ा था। लोगों का कहना है, कि १९८७ ई० में पुनः पूँछ वाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तारा दिखाई पड़ेगा। लोग इस तारे को 'हेली का धूमकेतु' कहते हैं।"

किशोर ने उत्कंठा के साथ पूछा—"ठीक है, पूँछ वाले तारे से दुनिया में प्रलय का कोई वास्ता नहीं है। पर यह तो बताइए, कि यह पूँछ वाला तारा है क्या चीज़ ?"

मास्टरजी ने कहा—"पूँछ वाला तारा क्या चीज़ है—इसे जानने से पहले यह जानना ग्रावश्यक है, कि पूँछ वाला तारा किसे कहते हैं, ग्रौर वह किस तरह का होता है ? पूँछ वाले तारे को लोग "पुच्छल तारा" कहते हैं। इसका कारण यह है, कि उसकी पूँछ होती है। तुम्हें यह सुनकर ग्राश्चर्य होगा, कि पुच्छल तारे की पूँछ दो-चार मील नहीं, लाखों मील लम्बी होती है। किसी-किसी पुच्छल तारे की पूँछ तो इतनी लम्बी होती है, कि यदि उसे सूर्य के पास से नीचे की ग्रोर लटका दिया जाए, तो वह पृथ्वी को छू ले! किसी-किसी पुच्छल तारे की दो-दो, ग्रौर तीन-तीन तक पूँछें होती हैं। एक पुच्छल तारा कभी दिखाई पड़ा था, जिसकी छः पूँछें थीं।"

सुखवीर विस्मय के स्वर में बोल उठा—"छः पूँछें !"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, छः पूँछें। ग्रगर छः पूँछों वाला तारा ग्राकाश में दिखाई पड़ जाए, तो उसे देखकर लोगों का डर जाना तो स्वाभाविक ही है। पर वास्तव में पुच्छल तारे से डरने की कोई बात नहीं है। क्योंकि वह बहुत पतला होता है, ग्रौर ऐसी चीज़ों से बनता है, जो हल्की होती हैं।

यदि संयोग से कोई पुच्छल तारा हमारी पृथ्वी से टकरा जाए, तो पृथ्वी को कोई हानि न होगी, क्योंकि पृथ्वी पुच्छल तारे से बहुत ग्रधिक कड़ी है। हाँ, यह ग्रवश्य होगा, कि पुच्छल तारे की पूँछ चिर जायेगी, ग्रौर उसका सिर फूट जायेगा।"

कैलाश बोल उठा—"फिर तो यही ग्रच्छा है, कि पुच्छल तारा पृथ्वी से कभी न टकराए। पर हम सबको यह ग्रवश्य बताइये, कि वह क्या चीज़ है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टरजी ने कहा—"तुम सब 'सूर्य परिवार' की बात सुन चुके हो। पुच्छल तारा भी सूर्य के परिवार का ही सदस्य है। पुच्छल तारे भी, सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं। सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हुए जब वे सूर्य के निकट पहुँच जाते हैं, तब उनका सिर ग्रौर पूँछ चमक उठती है। सूर्य के बहुत निकट पहुँचने पर उनकी पूँछ ग्राकाश में बहुत दूर तक फैली हुई दिखाई पड़ती है। कभी-कभी वह तेज़ी के साथ सरकती हुई भी जान पड़ती है। कभी-कभी वह इतनी लम्बी हो जाती है, कि सारे ग्राकाश को ढँक लेती है, ग्रौर लोगों के मन में डर पैदा करती है।"

रामदरश ने कहा—"जिस तरह ग्राज डर पैदा कर रही है!"

मास्टरजी ने मुस्कराते हुए कहा—"पर ग्रब वह डर न पैदा करेगी। क्योंकि उससे न तो दुनिया में प्रलय होगी, ग्रौर न उससे किसी तरह का नुकसान ही पहुँचेगा।"

सभी विद्यार्थी हँस पड़े। ऐसा लगा, जैसे सचमुच उनके मन में पुच्छल तारे का जो डर था, वह ग्रब दूर हो गया हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ४ :

सूर्य का रथ

"आओ, आज तुम सबको सूर्य के बारे में बतायें"—मास्टरजी ने अपनी जगह पर बैठते हुए कहा।

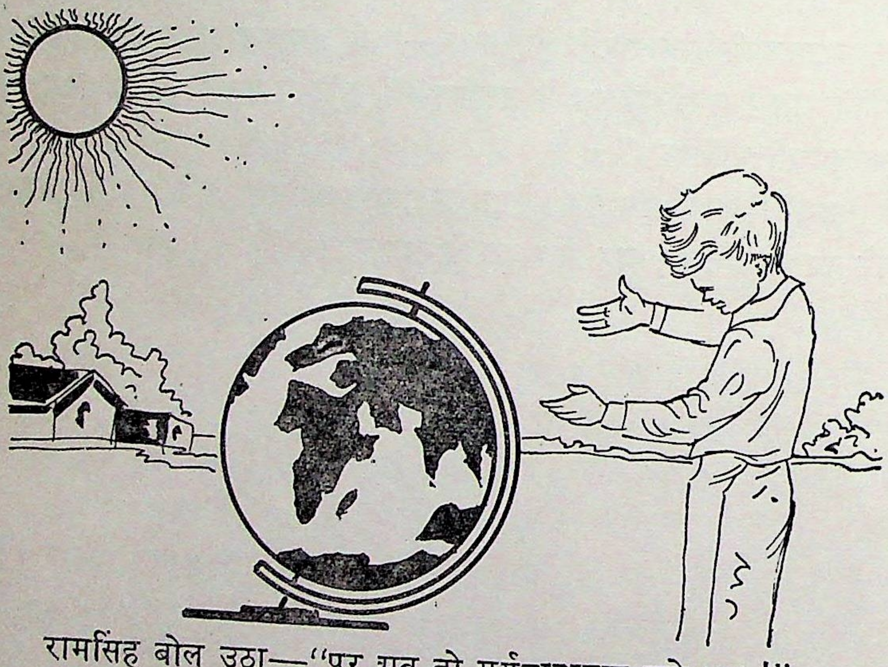

रामसिंह बोल उठा—"पर अब तो सूर्यनारायण चले गए !"

सभी विद्यार्थी हँस पड़े। पर मास्टरजी ने गम्भीर होकर कहा—"रामसिंह ! बताओ तो, तुम्हारे सूर्यनारायण कहाँ चले गए ?"

रामसिंह उत्तर के लिए तैयार न था। वह कुछ देर तक मन-ही-मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सोचता रहा; फिर उसने कहा—"बैकुंठ लोक में ! वे सवेरे फिर अपने रथ पर बैठ कर आयेंगे, और शाम को फिर चले जायेंगे।"

रामसिंह ने ज्योंही अपनी बात खतम की, सुखवीर बोल उठा—"पर, मास्टर साहब ! आपने तो यह बताया है, कि पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है। फिर यह सूर्य का रथ पर बैठ कर आना और जाना कैसा ?"

मास्टरजी ने कहा—"यह ग़लत है। बहुत-से लोग यही समझते हैं, कि सूर्यनारायण प्रतिदिन रथ पर बैठ कर आते और जाते हैं। पर वास्तव में सच बात यह है, कि जिस पृथ्वी पर हम-तुम रहते हैं, वही सूर्य के चारों ओर प्रतिक्षण चक्कर लगाती रहती है। तुम सब पूछ सकते हो, कि सूर्य सवेरे क्यों दिखाई पड़ता है, और शाम को फिर क्यों छिप जाता है ? इसका सीधा-सादा उत्तर यह है, कि पृथ्वी का वह भाग, जिस पर हम-तुम रहते हैं, घूमते-घूमते जब सूर्य के सामने पहुँचता है, तो सूर्य हमें-तुम्हें दिखाई पड़ता है; और जब वह ओट में चला जाता है, तब हमें-तुम्हें नहीं दिखाई पड़ता। दिन, रात, सवेरा और संध्या होने का यही कारण है।"

कैलाश ने प्रश्न किया—"पृथ्वी जब सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है, तो यह मानी हुई बात है, कि सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा होगा !"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"हाँ, सचमुच सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा है। यदि वह बड़ा न होता, तो उसके इर्द-गिर्द ग्रह, उपग्रह चक्कर कैसे लगाते ? कोई छोटी चीज़ ही तो बड़ी चीज़ के चारों ओर चक्कर लगा सकती है। सूर्य पृथ्वी से कितना बड़ा है—इसका अनुमान तुम केवल इसी बात से लगा सकते हो, कि यदि तेरह लाख पृथ्वियाँ सूर्य में डाल दी जायें, तो वे सब उसमें आसानी से समा जायेंगी। एक और तरीके से सूर्य की विशालता का अनुमान लगाया जा सकता है। यदि आकाश पर बैठकर कोई आदमी पृथ्वी के बराबर प्रति मिनट एक गोला बनाए, और एक के ऊपर दूसरे को रखता जाए, तो सूर्य के बराबर गोला बनाने में ढाई वर्ष लग जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रामदरश के मुँह से आश्चर्य के साथ निकल पड़ा—"इतना बड़ा है सूर्य ! पर दिखाई तो पड़ता है, मानो केवल थाली के बराबर हो ।"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, पृथ्वी पर खड़ा होकर देखने से वह केवल थाली के बराबर दिखाई पड़ता है, पर उसका व्यास हमारी पृथ्वी से बहुत बड़ा है । लोगों ने जाँच-पड़ताल करके मालूम किया है, कि सूर्य का व्यास ८ लाख ६४ हज़ार ४ सौ मील है । यदि कोई आदमी चार मील प्रति घंटे की चाल से पृथ्वी का चक्कर लगाए, तो उसे एक पूरा चक्कर लगाने में नौ महीने लगेंगे । पर अगर वह इसी चाल से सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाए, तो उसका एक चक्कर साढ़े सतासी वर्ष में पूरा होगा ।"

मास्टर साहब की बात सुनकर सभी विद्यार्थी सन्नाटे में आ गए, और मन ही मन सूर्य की विशालता पर आश्चर्य करने लगे ।

कुछ क्षणों के बाद जसवंत बोल उठा—"सचमुच, सूर्य की विशालता आश्चर्य में डाल देने वाली चीज़ है । पर यह तो बताइए, कि सूर्य बना किस चीज़ का है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"यदि तुम सब पृथ्वी को खोदो तो उसके भीतर से मिट्टी, चूना, पत्थर और तरह-तरह की धातुएँ निकलेंगी । इससे यह पता चलता है, कि पृथ्वी मिट्टी, पत्थर चूना, और धातुओं से बनी हुई है । पर यदि तुम सब सूर्य के गोले को खोदो, तो उसके भीतर से यह सब-कुछ न निकलेगा । सूर्य के भीतर केवल जलती हुई गैस तुम्हें मिलेगी; दूसरे शब्दों में सूर्य जलती हुई गैसों का एक गोला है ।"

कैलाश ने प्रश्न किया—"तब तो यह भी हो सकता है, कि सूर्य की गैसें कभी खतम हो जाएँ, और उनका जलना बन्द हो जाए ।"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"अगर ऐसा हो जाए, तब तो फिर प्रलय हो जाए । क्योंकि जब सूर्य का जलना बन्द हो जाएगा, तो फिर हमें-तुम्हें गर्मी और रोशनी कहाँ से मिलेगी ? जिस तरह से लकड़ी और कोयला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जलता है, और जलकर खतम हो जाता है, उस तरह से सूर्य की गैसों का जलना नहीं होता। सूर्य का भीतरी हिस्सा एक खास तरह की गैस का बना हुआ है। लोग उस गैस को हाइड्रोजन गैस कहते हैं। उसके भीतर बहुत अधिक गर्मी होती है। गर्मी से हाइड्रोजन गैस के नन्हें-नन्हें कण जिन्हें परमाणु कहते हैं, फट कर निकलते रहते हैं, और एक प्रकार की चमक-सी पैदा होती रहती है। उसी चमक को हम सब सूर्य की धूप और रोशनी कहते हैं।"

कैलाश बोल उठा—"सूर्य के भीतर की गर्मी! क्या उसका भी लोगों ने पता लगाया है?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"क्यों नहीं? सूर्य का भीतरी भाग इतना अधिक गर्म है, कि कुछ पूछो नहीं! लोगों ने उसकी गर्मी लगभग २,००,००,००० डिग्री सेण्टीग्रेड बतायी है। पर सूर्य के बाहरी भाग में इस से कम गर्मी है। सूर्य की जिस सतह से हमें गर्मी मिलती है, वह केवल ११००० डिग्री सेण्टीग्रेड गर्म है। पर इसका यह मतलब नहीं है, कि वहाँ कम गर्मी है। क्या तुम सबने इस्पात (लोहा) की भट्टी देखी है? इस्पात की भट्टी का भीतरी भाग बहुत अधिक गर्म होता है। तुम्हें यह जानना चाहिए, कि हमें सूर्य की जिस सतह से गर्मी मिलती है, वह इस्पात की भट्टी के भीतरी भाग से भी कई गुना अधिक गर्म है।"

रामदरश बोल उठा—"फिर तो इस बात का डर है ही नहीं, कि सूर्य की गैसें कभी जलकर खतम हो जाएँगी।"

मास्टरजी ने कहा—"बिल्कुल नहीं! क्योंकि सूर्य तुम्हारे सूर्यनारायण हैं। पर देखो, अब यह न कहना, कि सूर्यनारायण रोज़ रथ पर चढ़ कर आते हैं और चले जाते हैं।"

सभी विद्यार्थी हँस पड़े, और रामसिंह की ओर देखने लगे।

रामसिंह के ओठों पर भी मुस्कराहट नाच उठी—अनोखी मुस्कराहट!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ५ :

चन्दा मामा

कैलाश समय से कुछ पहले पाठघर पहुँच गया था, और वाचनालय में बैठकर बालकों का एक मासिक पत्र उलट-पुलट कर देख रहा था।

पत्र के एक पन्ने पर उसकी दृष्टि जम गई, और वह आश्चर्य के साथ पढ़ने लगा—चन्दा मामा के देश में—अमेरिका के लोग चन्दा मामा के

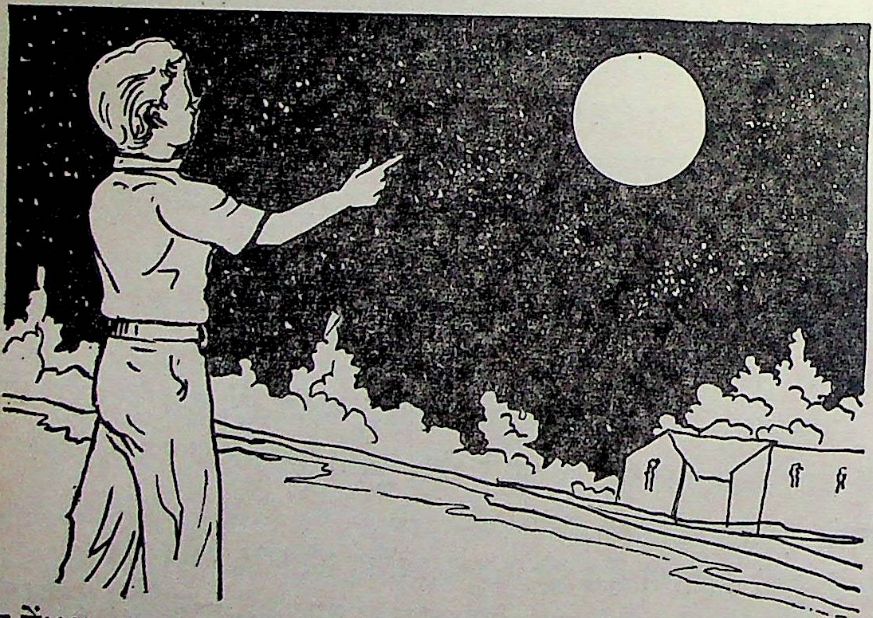

देश में...।

कैलाश अभी पढ़ ही रहा था, कि मास्टर साहब आ गए, और वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उठकर अपनी जगह चला गया।

पर उसके दिमाग में रह-रहकर यह बात चक्कर काटने लगी—अमेरिका के लोग चन्दा मामा के देश में!

कैसा होगा चन्दा मामा का देश! उसने अपनी दादी से चन्दा मामा की बहुत-सी कहानियाँ सुनी थीं। वे सभी कहानियाँ एक-एक करके उसे याद आने लगीं, पर उन कहानियों से उसके मन को संतोष न हुआ।

आखिर वह बोल उठा—"मास्टर साहब! एक अखबार में छपा है, कि अमेरिका के लोग चन्दा मामा के देश में जाने की तैयारी कर रहे हैं। क्या यह सच है?"

मास्टर ने कहा—"हाँ सच है, पर यह तो बताओ कि तुम चन्द्रमा को चन्दा मामा क्यों कहते हो?"

पर कैलाश मास्टरजी की इस बात का क्या उत्तर दे? क्योंकि उसने न तो कभी सुना था, और न सोचा ही था, कि वह चन्द्रमा को चन्दा मामा क्यों कहता है? वह सोचता रहा—केवल सोचता रहा।

मास्टरजी ने अपने आप ही कहा—"शायद इसलिए, कि चन्द्रमा बहुत प्यारा लगता है। पर सच बात तो यह है, कि चन्द्रमा न तो किसी का मामा है, और न भाई है।"

मास्टरजी की बात खतम होते ही रामसिंह बोल उठा—"फिर चन्द्रमा क्या है?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम सब 'सूर्य परिवार' में ग्रहों की बात सुन चुके हो। तुम सब यह भी सुन चुके हो, कि पृथ्वी भी एक ग्रह है। चन्द्रमा उसी पृथ्वी का उपग्रह है। उपग्रह उसे कहते हैं, जो बहुत-बड़े 'पिण्ड' की परिक्रमा करता है। चन्द्रमा पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमता है। इसलिए लोग उसे पृथ्वी का उपग्रह कहते हैं।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"चन्द्रमा भी तो सूर्य की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तरह थाली के समान दिखाई पड़ता है। फिर तो वह भी सूर्य की तरह बड़ा होगा ? पर पृथ्वी से बड़ा होने पर वह उसके इर्द-गिर्द चक्कर किस प्रकार लगाता होगा ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"यह ठीक है, कि चन्द्रमा भी सूर्य के समान ही थाली-सा दिखाई देता है; पर चन्द्रमा सूर्य से बहुत छोटा है। चन्द्रमा का व्यास केवल २१६० मील, अर्थात् सूर्य के व्यास का ४००वाँ भाग है। चन्द्रमा यों तो दूसरे ग्रहों और उपग्रहों से बड़ा है, पर वह पृथ्वी से छोटा है। चन्द्रमा का आकार पृथ्वी के आकार का केवल ५०वाँ भाग है।"

किशोर बोल उठा—"अगर चन्द्रमा सूर्य से छोटा है, तो क्या कारण है, कि वह हमें सूर्य के बराबर दिखाई पड़ता है ?"

मास्टरजी ने कहा—"इसका कारण यह है, कि चन्द्रमा हमारी धरती के अधिक निकट है। धरती से चन्द्रमा २ लाख ३८ हज़ार मील की दूरी पर है। यह दूरी सूर्य की दूरी का केवल ४००वाँ भाग है। चन्द्रमा धरती से इतना निकट है, कि यदि किसी तरह ३० पृथ्वियों को एक के ऊपर एक को जमाकर रखा जाए, तो हम आसानी से चन्द्रमा तक पहुँच जायेंगे। चन्द्रमा पृथ्वी के अधिक निकट है—इसीलिए अमेरिका और रूस के लोग चन्द्रमा में जाने की तैयारी भी कर रहे हैं।"

रामसिंह ने पूछा—"सूर्य से तो गर्मी मिलती है; क्योंकि सूर्य के भीतर गर्मी है। पर चन्द्रमा की रोशनी तो ठंडी होती है। फिर क्या चन्द्रमा में बर्फ पड़ती है ?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम सब को यह जानकर आश्चर्य होगा, कि जिस चन्द्रमा को लोग इतना प्यार करते हैं, उसके पास अपनी कोई चीज़ नहीं है—न चमक और न रोशनी, फिर तो यह सवाल ही नहीं उठता, कि उसमें बहुत गर्मी पड़ती होगी, या बहुत सर्दी ! हो सकता है, कि कभी गर्मी पड़ती हो, और यह भी हो सकता है, कि कभी सर्दी पड़ती हो। जानते हो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसका क्या कारण है ?"

पर किसी विद्यार्थी ने कुछ उत्तर न दिया। सब केवल आश्चर्य के साथ मास्टरजी की ओर देखते रह गए।

मास्टरजी ने फिर अपने ही आप कहा—"इसका कारण है सूर्य का प्रकाश और उसकी गर्मी। चन्द्रमा, सूर्य के प्रकाश से ही चमकता है। सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा पर पड़ता है, और फिर लौटकर धरती पर आता है। उसी लौटे हुए प्रकाश को हम चाँदनी, चन्द्रिका, या ज्योत्स्ना कहते हैं। यदि सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा पर न पड़ता, तो वह हमें कभी भी दिखाई न पड़ता। अमावस्या की रात में भी चन्द्रमा इसीलिए दिखाई नहीं पड़ता, कि उस दिन सूर्य का प्रकाश उसके गोले पर नहीं पड़ता; क्योंकि उस दिन वह घूमता-घूमता सूर्य के निकट चला जाता है। जो चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है, फिर तो उसकी सर्दी और गर्मी भी सूर्य पर ही निर्भर होगी।"

मनोहर बोल उठा—"तब तो यही कहना पड़ेगा, कि सूर्य ही सब-कुछ है और चन्द्रमा कुछ भी नहीं।"

मास्टरजी ने कहा—"नहीं, चन्द्रमा भी बहुत-कुछ है, और उससे लाभ भी बहुत-कुछ हैं। पर बहुत-कुछ होते हुए भी वह 'मामा' नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ६ :

बुढ़िया का चर्खा

मास्टरजी ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया—"चन्द्रमा की कहानी तुम लोग सुन चुके हो। पर, क्या तुम लोगों ने चन्द्रमा को ध्यान से देखा है?"

किशोर ने उत्तर दिया—"चन्द्रमा जब भी निकलता है, हम उसे बराबर देखते हैं।"

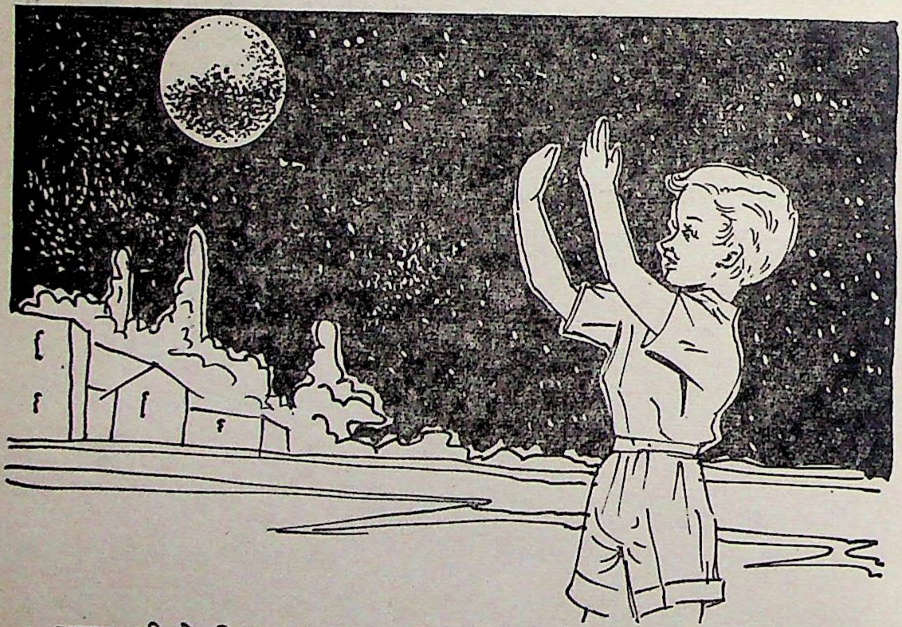

मास्टरजी ने फिर पूछा—"चन्द्रमा को जब तुम देखते हो, तो क्या तुम्हें उसके भीतर कुछ दिखाई पड़ता है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रामसिंह ने कहा—"हाँ, चन्द्रमा के भीतर काला-काला धब्बा-सा दिखाई पड़ता है।"

मास्टरजी ने कहा—"क्या तुममें से कोई बता सकता है, कि वह काला-काला धब्बा क्या चीज़ है ?"

सुखवीर बोल उठा—"वह एक बुढ़िया है, जो चन्द्रमा के भीतर बैठ कर चर्खा कातती रहती है।"

कैलाश ने कहा—"नहीं, वह एक मृग है, जो चन्द्रमा में रहता है।"

मोहन ने कहा—"नहीं, यह भी नहीं; वह एक खरगोश है।"

मास्टरजी ने सबकी बात बड़े ध्यान से सुनी, और फिर कहा—"नहीं, यह सब कुछ नहीं। चन्द्रमा के भीतर जो काला धब्बा दिखाई पड़ता है, वह न तो बुढ़िया का चर्खा है, न मृग है, और न खरगोश है। वह तो कुछ और ही चीज़ है।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ पूछा—"वह और चीज़ क्या है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"तुम यह सुन चुके हो, कि चन्द्रमा पृथ्वी के बहुत निकट है। चन्द्रमा से जो प्रकाश आता है, उसे चन्द्रमा से धरती पर पहुँचने में केवल १$\frac{१}{४}$ सेकिण्ड लगते हैं। चन्द्रमा की इस समीपता का विद्वानों ने बड़ा लाभ उठाया है। उन्होंने बड़ी-बड़ी दूरबीनों से चन्द्रमा की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल की है...।"

मास्टरजी की बात पूरी भी न हुई थी, कि रामसिंह बोल उठा—"उन्होंने जब चन्द्रमा को दूरबीनों से देखा है, तब तो उन्हें यह मालूम ही होगा, कि चन्द्रमा का काला-काला धब्बा क्या चीज़ है ?"

मास्टरजी ने कहा—"क्यों नहीं ? अगर उन्होंने मालूम न किया होता तो आज यहाँ हम तुम लोगों के सामने यह कैसे कहते, कि चन्द्रमा में जो काला-काला धब्बा है, वह बुढ़िया का चर्खा नहीं है ? जिसे तुम सब लोग बुढ़िया का चर्खा कहते हो, वास्तव में वह चन्द्रमा की धरती है, जो बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ऊबड़-खाबड़ है । तुम सब लोगों ने ऐसे किसी ग्रादमी को देखा होगा, जिसके शरीर पर शीतला के दाग़ होते हैं। ठीक शीतला के दाग़ों ही की तरह चन्द्रमा की धरती भी बड़ी ऊबड़-खाबड़ है । कहीं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं तो कहीं पतली-पतली खाइयाँ।"

रामसिंह ग्राश्चर्य के साथ बोल उठा—"चन्द्रमा के भीतर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ ग्रौर खाइयाँ !"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, चन्द्रमा के भीतर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ ग्रौर गहरी-गहरी खाइयाँ हैं । कहीं-कहीं पहाड़ों के बीच में बड़े-बड़े मैदान भी हैं, जो टापू की तरह ज्ञात होते हैं । ग्राश्चर्य की बात तो यह है कि चन्द्रमा में ऐसे भी पहाड़ हैं, जिन्हें लोग ज्वालामुखी पहाड़ कहते हैं ।"

रामदरश बोल उठा—"ज्वालामुखी पहाड़ तो उसे कहते हैं, जिसके भीतर से ग्राग निकलती है । ग्राग उगलने वाले पहाड़ ग्रौर चन्द्रमा में !"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, पर तुम्हें यह जानकर संतोष होगा, कि वे सब के सब ठंडे हैं, ग्रर्थात ग्रब उनके भीतर से ग्राग, धुँग्रा, ग्रौर राख कुछ भी नहीं निकलती । पर यह तो सत्य ही है कि चन्द्रमा के भीतर बड़े-बड़े पहाड़ हैं ग्रौर उनकी ऊँची-ऊँची चोटियाँ हैं। कई पहाड़ तो इतने बड़े हैं कि वे ५० फुट से लेकर १००-१०० फुट तक की चौड़ाई में बिखरे हुए हैं ।"

सुखवीर ने प्रश्न किया—"पहाड़ों ग्रौर खाइयों के ग्रलावा क्या चन्द्रमा में ग्रौर भी चीज़ें हैं ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"पहाड़ों ग्रौर खाइयों के ग्रलावा चन्द्रमा में बड़ी-बड़ी दीवारें ग्रौर दरारें भी हैं । कुछ ऐसे भी पहाड़ चन्द्रमा में हैं, जिनके भीतर से प्रकाश की किरणें निकलती हुई दिखाई पड़ती हैं । पर ग्रसल में वे प्रकाश की किरणें नहीं हैं । केवल प्रकाश की किरणों की तरह दिखाई भर पड़ती हैं ।"

मनोहर उत्कंठा के साथ बोल उठा—"चन्द्रमा के भीतर वे पहाड़,

Sri ... Library
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वे दरारें और वे दीवारें भला किस तरह बनी होंगी ?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि चन्द्रमा भी कभी गैसों का बुदबुदाता हुआ एक गोला था। पर धीरे-धीरे वह ठंडा होता गया, और उसमें भूडोल के बड़े-बड़े धक्के आने लगे। भूडोल के धक्कों से धरती फट गई। बड़ी-बड़ी दरारें पैदा हो गईं। धरती के भीतर से जो आग, धुँआ और राख निकली, ठंडा होने पर उसी के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और दीवारें बन गईं।"

कैलाश ने उत्कंठा के साथ पूछा—"क्या चन्द्रमा में पेड़-पौधे भी हैं ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"नहीं। तुम पूछ सकते हो, कि क्यों ? तुम सब जानते हो, कि पेड़-पौधे वहीं पैदा होते हैं, या पनपते हैं, जहां हवा-पानी, और अच्छी ज़मीन होती है। पर चन्द्रमा में यह सब-कुछ नहीं है। न तो अच्छी ज़मीन है, न पानी, और न हवा। इसका कारण है, चन्द्रमा की गर्मी और सर्दी। दिन में चन्द्रमा में इतनी गर्मी पड़ती है, कि अगर पानी हो, तो उबल जाए। फिर भला, चन्द्रमा में पानी कैसे हो सकता है ? इसी प्रकार रात में इतनी सर्दी पड़ती है, कि पानी की कौन कहे, अगर तेल हो तो वह भी जम जाए।"

मोहन बोल उठा—"जब चन्द्रमा में हवा और पानी ही नहीं हैं, तो फिर अमेरिका और रूस के लोग वहाँ जाकर किस तरह रहेंगे ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"किस तरह रहेंगे, यह तो अभी नहीं कहा जा सकता। हो सकता है, वे कुछ ऐसी तरकीब निकालें, जिससे चन्द्रमा में आदमी के लिए हवा और पानी आदि भी मिल सके। पर अभी तो यही बात है, कि चन्द्रमा में मनुष्य की कौन कहे, कोई पेड़-पौधा भी जीवित नहीं रह सकता।"

रामदरश बोल उठा—"भगवान करे, रूस और अमेरिका के लोग अपने प्रयत्नों में सफल हो जायें और वे चन्द्रमा में पहुँचकर, उसे ऐसा बना दें,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि वहाँ आदमी रह सके।

मास्टरजी ने कहा—"जिससे हम सब लोग भी कभी चन्द्रलोक की सैर कर सकें !"

पर वह दिन कब आयेगा—यह कौन जानता है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ७ :

क्षय-रोगी चन्द्रमा

पूर्णिमा की रात थी। संध्या होते ही चन्द्रमा आकाश में खिल-खिला कर हँस पड़ा।

किशोर और रामसिंह, दोनों अपने-अपने घर से निकल कर साथ-साथ पाठघर जा रहे थे।

किशोर पूरे चन्द्र को देख कर बोल उठा—"आज पूर्णिमा है। देखो, आकाश में कितना सुन्दर चन्द्रमा निकला हुआ है!"

रामसिंह ने भी चन्द्रमा की ओर देखा। उसे भी चन्द्रमा बहुत सुन्दर लगा, पर वह किशोर की बात का कुछ उत्तर न देकर मन-ही-मन कुछ सोचने लगा।

किशोर फिर बोल उठा—"तुम किस विचार में मग्न हो गए रामसिंह?"

रामसिंह ने उत्तर दिया—"मैं यह सोच रहा हूँ किशोर, कि आज तो यह चन्द्रमा पूरा-पूरा निकला हुआ है, पर कल घट जाएगा; और घटते-घटते इतना घट जाएगा, कि एक दिन दिखाई भी न पड़ेगा।"

किशोर ने एक लम्बी साँस लेते हुए कहा—"हाँ, है तो बड़े दुःख की बात! पर कोई क्या कर सकता है? कहते हैं कि चन्द्रमा को एक मुनि का श्राप है।"

रामसिंह आश्चर्य के साथ बोल उठा—"कैसा श्राप? ज़रा हमें भी तो सुनाओ!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किशोर ने कहा--"इस सम्बन्ध में हमारे दादा ने हमें एक कहानी सुनाई थी। उस कहानी के अनुसार चन्द्रमा ने एक मुनि के साथ छल किया था। उन्होंने उसे श्राप दिया था कि वह क्षय का रोगी हो जाए। बस,

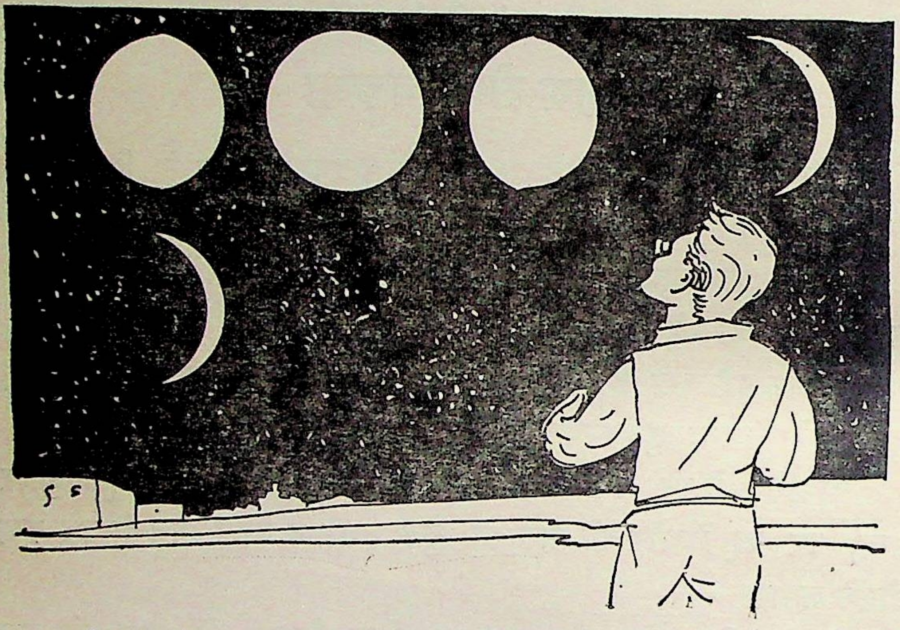

चन्द्रमा को क्षय हो गया, और वह धीरे-धीरे गलने लगा। पर उसने शिवजी की बड़ी तपस्या की। शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया, कि पन्द्रह दिन तक उसका क्षय (नाश) अवश्य होगा, पर दूसरे पखवाड़े में वह धीरे-धीरे बढ़ कर फिर अपने पूरे आकार में आ जाएगा। चन्द्रमा का घटना-बढ़ना मुनि के उसी श्राप और शिवजी के वरदान के ही कारण होता है।"

किशोर की बात खतम होते ही कोई पीछे से बोल उठा—"पर यह ग़लत है। चन्द्रमा के घटने-बढ़ने से मुनि के श्राप और शिवजी के वरदान से कोई वास्ता नहीं है।"

किशोर और रामसिंह ने चकित होकर पीछे की ओर मुड़कर देखा। वे स्वयं मास्टर साहब थे, जो किशोर और रामसिंह की बात को चुपचाप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ध्यान से सुनते हुए पाठघर जा रहे थे।

मास्टर साहब फिर अपने आप ही बोल उठे---"हाँ, यह ग़लत है। पर क्यों ग़लत है—यह हम तुम्हें पाठघर में पहुँचकर बतायेंगे, जिससे सबको यह बात मालूम हो जाये, कि चन्द्रमा क्यों घटता और बढ़ता है?"

किशोर और रामसिंह ने कुछ उत्तर न दिया। पर उनके भीतर यह बात तो पैदा हो ही उठी, कि चन्द्रमा के घटने और बढ़ने का क्या कारण है?

मास्टर साहब ने पाठघर में अपनी जगह पर बैठते हुए कहा--"आज हम तुम लोगों के सामने एक और नई चर्चा करेंगे? क्या तुम लोगों में से कोई यह बता सकता है, कि चन्द्रमा क्यों घटता और बढ़ता है?"

पर किसी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। सब के सब चकित होकर मास्टरजी की ओर देखने लगे।

मास्टरजी ने अपने आप कहा--"किशोर का कहना है, कि चन्द्रमा के घटने-बढ़ने का वास्ता किसी एक मुनि के श्राप और शिवजी के वरदान से है। पर मैं कहता हूँ, कि यह गलत है? तुम सब पूछ सकते हो, कि क्यों गलत है?"

पर फिर भी सबके सब विद्यार्थी मौन ही रहे।

मास्टर साहब फिर अपने ही आप बोल उठे—"तुम सब न पूछोगे। अच्छा, मैं बताता हूँ; ध्यान से सुनो! तुम सब इस बात को सुन चुके हो, कि चन्द्रमा के पास अपना प्रकाश नहीं है। चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है। चन्द्रमा के जिस भाग पर और जितना प्रकाश पड़ता है, उसी के हिसाब से चन्द्रमा हमें दिखाई पड़ता है। चन्द्रमा पृथ्वी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहता है। उधर पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती रहती है। चन्द्रमा को पृथ्वी का एक पूरा चक्कर लगाने में साढ़े उनतीस दिन का समय लगता है। चन्द्रमा और पृथ्वी—दोनों के चक्कर लगाने का नतीजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होता है; कि सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा के हिस्सों पर घट-बढ़ कर पड़ा करता है। और उसी का यह फल होता है, कि चन्द्रमा हमें घटता और बढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। चन्द्रमा स्वयं अपने आकार को नहीं बदलता। वह तो सदा एक गोले के ही रूप में रहता है। अमावस्या की रात में जब चन्द्रमा बिल्कुल नहीं दिखाई पड़ता, उस समय भी वह आकाश में मौजूद रहता है। चन्द्रमा के घटने-बढ़ने और उसे प्रकाशित करने का पूरा खेल सूर्य के ही द्वारा खेला जाता है। इसी खेल का यह नतीजा है, कि चन्द्रमा एक पतली कोर से बढ़ते-बढ़ते पूरी थाली के आकार का बन जाता है। और फिर घटते-घटते इतना घट जाता है, कि एक दिन दिखाई भी नहीं पड़ता।"

किशोर बोल उठा—"और लोग उस दिन की रात को अमावस्या की रात कहते हैं।"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ! अमावस्या के दूसरे दिन से चन्द्रमा फिर बढ़ने लगता है। चन्द्रमा को पृथ्वी का पूरा चक्कर लगाने में साढ़े उनतीस दिन का समय लगता है। इसलिए साढ़े उनतीस दिन ही चन्द्रमा को फिर पूरे होने में लगते हैं। जिस दिन चन्द्रमा पूरा होता है, जानते हो उसे क्या कहते हैं?"

सभी विद्यार्थी एक साथ ही बोल उठे—"पूर्णिमा, पूर्णिमा!"

मास्टरजी के भी मुख से निकल पड़ा—"हाँ पूर्णिमा, पूर्णमासी!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ८ :

देवताओं की नदी

मास्टरजी ने विद्यार्थियों को गंगा के बारे में बताते हुए कहा—"गंगा को देवताओं की नदी भी कहते हैं।"

मास्टर साहब अपनी बात समाप्त ही कर पाए थे, कि रामसिंह बोल उठा—"मास्टर साहब ! हमारे दादा कहते हैं, कि देवताओं की नदी आकाश में होती है।"

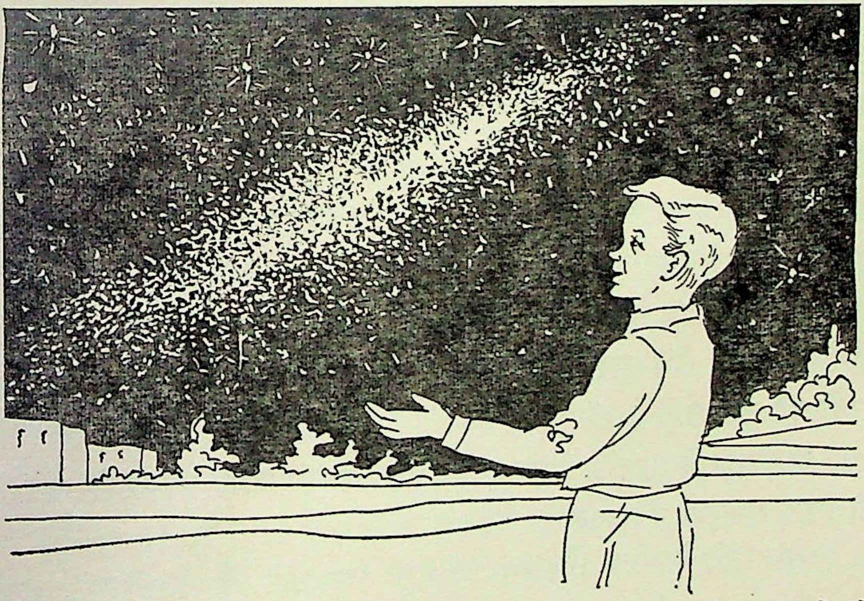

मास्टर साहब विचारों में डूब गए। कुछ देर तक मन-ही-मन सोचते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहे; फिर बोल उठे—"क्या तुमने कभी उस नदी को देखा है ?"

रामसिंह ने कहा—"हाँ, मास्टर साहब ! दादा ने कई बार मुझे दिखाया है। उसका पानी बिलकुल दूध का सा होता है। दादा कहते हैं, कि रात में जब सब लोग सो जाते हैं, तो उसमें स्वर्ग के देवता स्नान करते हैं।"

मास्टर साहब जब तक कुछ बोलें, उनके पहले ही किशोर बोल उठा—"हाँ मास्टर साहब ! सचमुच आकाश में देवताओं की एक नदी होती है। मैंने भी उसे कई बार देखा है। मेरी दादी कहती है कि उस में रात को स्वर्ग की परियाँ स्नान करती हैं।"

मास्टर साहब कुछ देर तक चुप रहे; फिर उन्होंने विद्यार्थियों की ओर देखते हुए पूछा—"क्या और किसी को कुछ कहना है ?"

पर किसी ने कुछ न कहा। सब-के-सब केवल मास्टर साहब की ओर देख कर ही रह गए।

मास्टर साहब फिर अपने आप ही बोल उठे—"आकाश में आकाश गंगा तो है, पर उसमें न तो देवता स्नान करते हैं, और न परियाँ ही नहाती हैं। क्योंकि जिसे तुम दूध का सा पानी समझते हो, वह पानी नहीं है।"

रामसिंह ने आश्चर्य के स्वर में कहा—"आकाश गंगा में पानी नहीं है ! फिर उसमें क्या है ? क्या दूध है ?"

मास्टर साहब हँस पड़े। उन्होंने हँसते हुए कहा—"उसमें दूध और पानी कुछ नहीं है। वास्तव में जिसे तुम पानी की नदी समझते हो, वह पानी की नदी नहीं है।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"पानी की नदी नहीं है, तो फिर आकाश गंगा क्या है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"आकाश गंगा तारों की धुँधली सफेद पट्टी है। वह हमें एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैली हुई दिखाई पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ऐसा लगता है, मानो दूध की धारा बह रही हो। पर वास्तव में वे चमकते हुए तारे हैं, जो एक-दूसरे के बहुत ही पास हैं, और बादल की तरह दिखाई पड़ते हैं। तुम सब पूछ सकते हो, कि हमें आकाश गंगा के तारे एक के पीछे एक क्यों दिखाई पड़ते हैं? इसका उत्तर यह है, कि जब तुम आकाश गंगा की ओर देखते हो, तब तुम उसके बीच के भाग की ओर देखते रहते हो। बीच के भाग की ओर देखने के कारण वे सभी तारे तुम्हें आपस में मिले हुए और एक के बाद एक दिखाई पड़ते हैं।"

कैलाश बोल उठा—"आकाश गंगा में क्या सब तारे ही तारे हैं, या और कुछ भी है?"

मास्टरजी ने कहा—"यों तो जिसे हम आकाश गंगा कहते हैं, वह तारों का ही एक बहुत-बड़ा संसार है। तुम सब सूर्य के परिवार की बात सुन चुके हो। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा, कि आकाश गंगा के तारों का संसार, सूर्य के परिवार से अनेक गुना बड़ा है। पर इसका यह मतलब नहीं है, कि तारों के इस संसार में सभी जगह एक समान तारे बिखरे हुए हैं। लोगों ने दूरबीन से देख कर मालूम किया है कि किसी जगह कम तारे हैं, तो किसी जगह हज़ारों हैं। ऐसी भी बहुत-सी जगहें हैं, जहाँ तारे हैं ही नहीं। कुछ ऐसे भी तारे हैं, जिनके आस-पास सफेद भूमि या बदली-सी दिखाई पड़ती है। लोग इसे 'नीहारिका' कहते हैं। पर आकाश गंगा के तारों की संख्या आश्चर्य में डाल देने वाली चीज़ है।"

कैलाश ने फिर उत्सुकता के साथ प्रश्न किया—"क्या लोगों ने यह भी मालूम किया है, कि आकाश गंगा के तारों की कुल संख्या कितनी है?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"हाँ, पहले लोगों ने अनुमान लगाया था, कि आकाश गंगा के कुल तारों की संख्या २,००,००,००,००,००० है। पर अब यह बात सिद्ध हो चुकी है, कि आकाश गंगा में तारों की संख्या ३,००,००,००,००,००० से भी अधिक है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुखवीर ने प्रश्न किया—"तब तो लोगों ने यह भी पता लगाया होगा, कि आकाश गंगा कितनी बड़ी है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"क्यों नहीं, पर आकाश गंगा की लम्बाई को मीलों की संख्या में बताना बड़ा कठिन है; क्योंकि वह इतनी बड़ी है कि उसे प्रगट करने में तुम्हारी संख्या ही खतम हो जाएगी। पर जिस प्रकार पृथ्वी से सूर्य और तारों की दूरी बताने में लोगों ने प्रकाश-वर्ष से काम लिया है, उसी प्रकार लोगों ने आकाश गंगा की लम्बाई भी प्रकाश-वर्ष में प्रगट की है। लोगों का कहना है, कि आकाश गंगा एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक १,००,००० से २,००,००० प्रकाश-वर्ष के बीच में फैली है। बीच में उसकी मोटाई १०,००० से २०,००० प्रकाश-वर्ष तक है।"

कैलाश बोल उठा—"आकाश गंगा एक ही है, या उसके अलावा और कई गंगाएँ हैं ?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम जिस आकाश गंगा को देखते हो, उसके अलावा आकाश में और बहुत-सी गंगाएँ हैं।

इन सभी गंगाओं को 'मंदाकिनी' कहते हैं। तुम्हें दिखाई पड़ने वाली आकाश गंगा भी एक मन्दाकिनी है। जो मंदाकिनी सबसे निकट है और बिना दूरबीन के भी देखी जा सकती है, उसे 'देवयानी' कहते हैं।"

मास्टरजी की बात सुनकर रामदरश ने कहा—"मन्दाकिनी और देवयानी ! इनके नाम से तो ऐसा लगता है, मानो ये सचमुच देवताओं की नदियाँ हों। इनके नामों से कोई यह भी सोच ले तो आश्चर्य नहीं, कि इनमें देवता स्नान करते होंगे।"

मास्टरजी ने कहा—"जिस तरह रामसिंह के दादा और किशोर की दादी सोचती हैं। पर सच बात तो यह है, कि वे नदियाँ नहीं हैं, तारे हैं—केवल तारे हैं !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ९ :

राहु और केतु की कहानी

पूर्णिमा की संध्या बीत चुकी थी। आकाश में चन्द्रमा अपनी पूरी कलाओं के साथ हँस रहा था।

कैलाश पाठशाला में पहुँचते ही बोल उठा—"रामसिंह ! क्या तुम्हें मालूम है, आज रात को ग्रहण लगेगा ?"

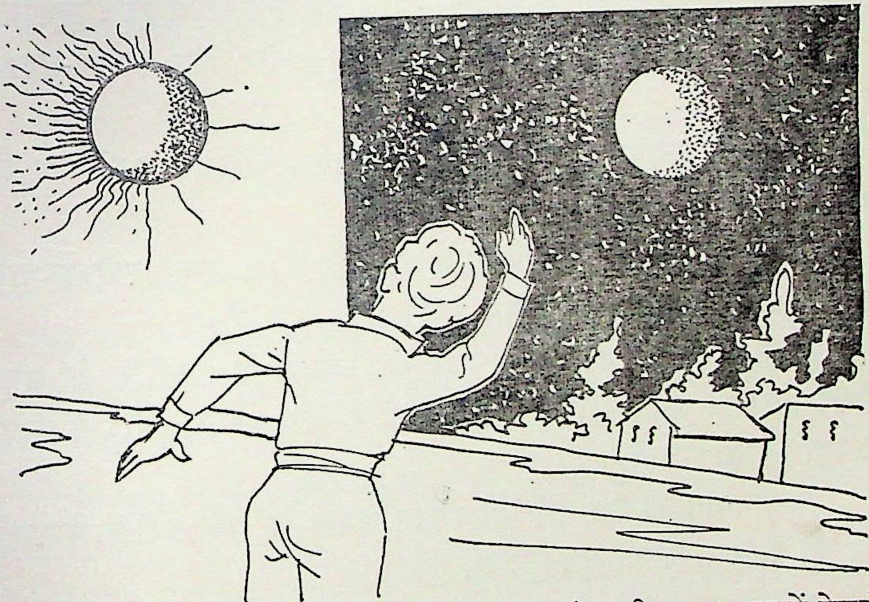

रामसिंह ने दुःख के साथ उत्तर दिया—"हाँ भाई, आज रात में बेचारे चन्द्रमा को राहु और केतु दोनों पकड़ लेंगे। चन्द्रमा की जल्दी मुक्ति हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाये—इसीलिए तो लोग आज अभी से दान-पुण्य करने की तैयारी कर रहे हैं। बहुत-से लोग अभी से गंगा में स्नान करने के लिए भी जा रहे हैं।"

कैलाश ने आश्चर्य के स्वर में कहा—"यह राहु-केतु कौन हैं, रामसिंह! बेचारे चन्द्रमा को ये दोनों क्यों पकड़ते हैं ?"

रामसिंह ने कहा—"ये दोनों राक्षस हैं। दादा ने इस सम्बन्ध में मुझे एक कहानी सुनायी है। मैं तुम्हें भी सुना रहा हूँ—

बहुत दिन हुए, समुद्र मथा गया था, और उसके भीतर से विष और अमृत के घड़े निकले थे। देवता और राक्षस दोनों आपस में लड़ने लगे। देवताओं का कहना था, कि अमृत पर उनका अधिकार है; पर राक्षस कहते थे, कि नहीं, उनका।

जब दोनों में झगड़ा बढ़ा, तो भगवान एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण करके पहुंचे, और राक्षसों से बोले—"तुम सब क्यों लड़ते हो ? तुम और देवता अलग-अलग पंक्ति में बैठ जाओ। मैं अमृत और विष बराबर-बराबर बाँट दूंगी।"

राक्षसों ने बात मान ली ; क्योंकि वे भगवान के उस रूप को देख कर उन पर भी मोहित हो उठे थे।

राक्षस और देवता दोनों अलग-अलग पंक्ति में बैठ गए। स्त्री रूपधारी भगवान दोनों को अमृत और विष बाँटने लगे।

भगवान राक्षसों को अमृत नहीं देना चाहते थे। क्योंकि वे अमृत पीकर अमर हो जाते, तो फिर उन्हें कोई न मार सकता, और वे संसार में बड़ा उत्पात मचाते।

पर भगवान की इस बात को राक्षस समझ न सके, क्योंकि वे उनके रूप को देखकर, अपनी सुध-बुध खो चुके थे।

भगवान देवताओं को अमृत और राक्षसों को विष देने लगे। राक्षस विष को ही अमृत समझकर पीने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर राहु और केतु दोनों भगवान की चालाकी को ताड़ गए। ये दोनों भाई थे। दोनों चुपके से राक्षसों की पंक्ति से उठे और देवताओं की पंक्ति में सूर्य और चन्द्रमा के बीच में जाकर बैठ गए।

भगवान ने धोखे में उन्हें भी अमृत दे दिया और वे उसे पीने लगे। पर अभी उन्होंने अमृत को ओठों से लगाया ही था कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों ने इशारे से भगवान को यह बता दिया, कि ये दोनों राक्षस हैं। भगवान ने झट अपने सुदर्शन चक्र से दोनों का सिर काट लिया। पर फिर भी वे दोनों न मरे; क्योंकि वे अमृत पी चुके थे।

वही दोनों, अवसर पाते ही सूर्य और चन्द्रमा से अपना बदला चुकाते हैं, और उन्हें पकड़ लेते हैं।"

रामसिंह की बात खत्म होते ही कोई बोल उठा—"पर, रामसिंह! तुम्हारी यह बात ग़लत है। चन्द्र और सूर्य ग्रहण का राहु और केतु से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

रामसिंह ने आश्चर्य के साथ देखा, वे मास्टर साहब ही थे। वे अपने स्थान पर बैठकर अखबार पढ़ रहे थे, पर उनका ध्यान रामसिंह की बातों की ही ओर था।

रामसिंह कुछ सकुचा-सा गया।

मास्टर साहब फिर अपने ही आप बोल उठे—"हाँ, रामसिंह! तुम्हारी यह बात ग़लत है। चन्द्र और सूर्य ग्रहण का तुम्हारी राहु-केतु की कहानी से कोई वास्ता नहीं है।"

कैलाश बोल उठा—"फिर आप ही बतायें कि चन्द्र और सूर्य ग्रहण क्यों लगता है?"

मास्टरजी ने कहा—"चन्द्र और सूर्य ग्रहण का कारण केवल वह चक्कर है, जिसे चन्द्रमा और पृथ्वी दिन-रात पूरे करते रहते हैं।"

सुखवीर ने कहा—"पर उस चक्कर से चन्द्रमा और सूर्य—दोनों किस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चीज़ से ढँक जाते हैं ?"

मास्टरजी ने कहा—"मैं तुम लोगों को बता चुका हूँ, कि पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है, और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। तुम्हें यह बात भी मालूम हो चुकी है, कि चन्द्रमा के पास अपना प्रकाश नहीं है। वह केवल सूर्य के प्रकाश से चमकता है। चंद्रमा और पृथ्वी—दोनों ही घूमते रहते हैं। इस प्रकार दोनों के घूमने से कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि पृथ्वी चन्द्रमा और सूर्य के बीच में आ जाती है। जब कभी ऐसा होता है, तो पृथ्वी के बीच में आ जाने से चन्द्रमा पर सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ता, और वह हमें काला दिखाई पड़ता है। बस, इसी को लोग चंद्र ग्रहण कहते हैं।"

किशोर ने प्रश्न किया—"पर इसका क्या कारण है, कि चंद्र ग्रहण कभी पूरा, कभी आधा, और कभी चौथाई दिखाई पड़ता है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"इसका कारण चंद्रमा का ढँकाव है। पृथ्वी के बीच में आ जाने से जब चंद्रमा पूरा ढँक जाता है, तो पूर्ण ग्रहण होता है। इसी प्रकार जब आधा और चौथाई ढँकता है तो 'खण्ड ग्रहण' होता है।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"क्या सूर्य ग्रहण का भी कारण पृथ्वी और चन्द्रमा का घुमाव ही है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"हाँ, पृथ्वी और चंद्रमा के घूमने से ही सूर्य ग्रहण भी लगता है। पृथ्वी और चंद्रमा—दोनों घूमते-घूमते अमावस्या के दिन सूर्य की सीध में आ जाते हैं। उस समय सूर्य और पृथ्वी के बीच में चंद्रमा होता है। बीच में चंद्रमा होने के कारण सूर्य ढँक जाता है, और दिखाई नहीं पड़ता। लोग इसी को सूर्य ग्रहण कहते हैं। तुम पूछ सकते हो, कि सूर्य ग्रहण हर 'अमावस्या' को क्यों नहीं होता ? इसका उत्तर है, कि हर अमावस्या को सूर्य, चंद्र और पृथ्वी—तीनों एक सीध में होने पर भी ऐसी दशा में नहीं होते, कि चन्द्रमा पूरी तरह से सूर्य को ढँक सके। क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चन्द्रमा खिसकता रहता है, और उसके खिसकने से वह सीधी रेखा नहीं बनती, जिससे ग्रहण लगता है। तुम सब यह भी पूछ सकते हो, कि सूर्य ग्रहण कहीं दिखाई पड़ता है, और कहीं बिलकुल क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? इसका उत्तर यह है, कि जितने हिस्से पर चन्द्रमा की छाया पड़ती है, उतने ही हिस्से के लोगों को सूर्य ग्रहण दिखाई पड़ता है। लोगों का यह कहना है कि यह क्षेत्र १५० मील या उससे अधिक होता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, जब यह क्षेत्र बहुत कम होता है।"

किशोर ने पूछा—"क्या सूर्य के 'खंड ग्रहण' का भी वही कारण है, जो चन्द्रमा के 'खंड-ग्रहण' का है ?"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ ! चन्द्रमा की जितनी छाया सूर्य पर पड़ती है, उसी के हिसाब से सूर्य ग्रहण भी लगता है। जब पूरा सूर्य ढँकता है, तो 'पूर्ण ग्रहण' लगता है। आधा, चौथाई या तिहाई ढँके जाने पर 'खंड ग्रहण' होता है।"

रामसिंह बोल उठा—"फिर तो यही कहना पड़ेगा, कि राहु और केतु की कहानी सच नहीं है।"

मास्टरजी ने फिर कहा—"हाँ, रामसिंह ! राहु और केतु की कहानी सच नहीं है। अब तुम कभी इस कहानी को सूर्य-चन्द्र ग्रहण के साथ न जोड़ना।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: १० :

यह तो शेषनाग ने सांस ली है

किशोर जब पाठघर में पहुँचा, तो वह कुछ घबड़ाया हुआ सा था। कक्षा में पैर रखते ही वह बोल उठा—"मास्टर साहब ! अभी-अभी भूडोल आया था।"

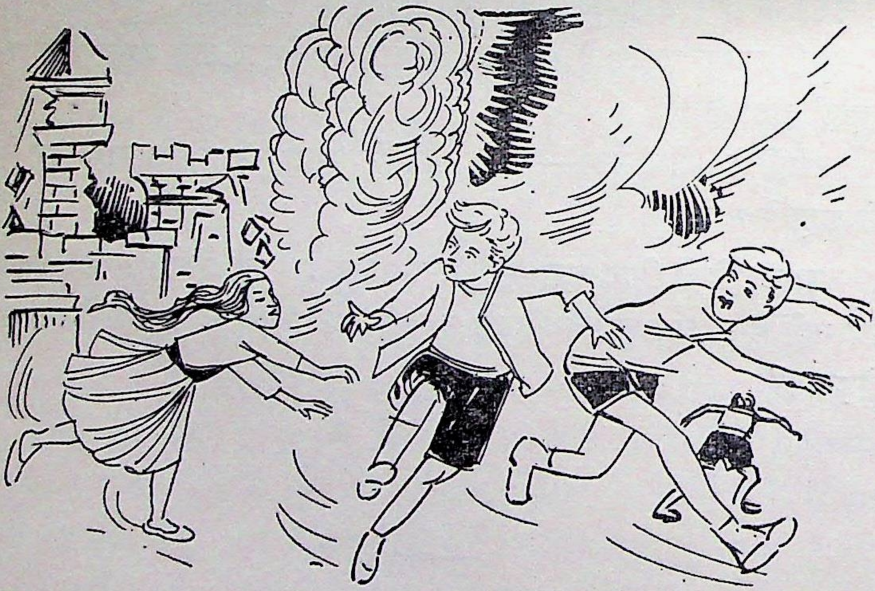

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, आया था; हम लोगों को भी मालूम हुआ था। पर भगवान को धन्यवाद है, कि उसका धक्का बहुत ही हल्का था।"

किशोर चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर मास्टर साहब विचार-मग्न हो उठे; कुछ देर तक मन-ही-मन सोचते रहे। फिर अपने आप ही बोल पड़े—"किशोर ! क्या तुम बता सकते हो कि भूडोल क्यों आता है ?"

किशोर ने कुछ उत्तर न दिया। वह केवल मास्टर साहब की ओर देख कर रह गया।

पर किशोर के बदले रामदरश बोल उठा—"मैं बताऊँ मास्टर साहब ! भूडोल क्यों आता है ?"

मास्टर साहब ने कहा—"हाँ-हाँ, बताओ; अवश्य बताओ।"

रामदरश ने बड़े ही उत्साह के साथ कहा—"पृथ्वी शेषनाग के फरण पर रुकी हुई है। शेषनाग जब कभी थक जाते हैं और साँस लेते हैं, तब पृथ्वी डोल उठती है। इसी को हम सब लोग भूडोल कहते हैं ?"

मास्टर साहब कुछ देर तक चुप रहे। दूसरे विद्यार्थियों को लगा, कि रामदरश ने जो कुछ कहा है, वह ठीक ही है।

पर दूसरे ही क्षरण जब मास्टर साहब बोल पड़े, तो सभी विद्यार्थी उत्कंठित होकर उनकी ओर देखने लगे।

मास्टर साहब ने कहा—"रामदरश ! तुम्हारी यह बात वैसी ही है, जैसी सूर्य और चन्द्र ग्रहरण के बारे में राहु और केतु की कहानी।"

रामदरश तो कुछ न बोला, पर सुखवीर बोल उठा—"तो क्या यह सही नहीं है, कि भूडोल शेषनाग के साँस लेने के काररण आता है ?"

मास्टरजी ने कहा—"बिलकुल सही नहीं है। पृथ्वी न तो शेषनाग के फरण पर रुकी हुई है, और न शेषनाग के साँस लेने से भूडोल ही आता है ?"

यशवन्त ने प्रश्न किया—"फिर आप ही बतायें, कि भूडोल क्यों आता है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"भूडोल पृथ्वी की भीतरी गर्मी के काररण आता है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा, कि पृथ्वी के भीतर भयानक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्मी है। उस गर्मी की तुलना उस आग से की जा सकती है, जो धधकती हुई दिखाई पड़ती है।"

किशोर बोल उठा—"पर पृथ्वी के भीतर की वह गर्मी तो हम लोगों को मालूम नहीं होती ?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम्हें उस गर्मी का पता कैसे लग सकता है, क्योंकि तुम तो उस पपड़ी के ऊपर रहते हो, जिसे पृथ्वी का ऊपरी भाग कहते हैं। तुम सबने अण्डे को तो देखा ही होगा। अण्डे के ऊपर चारों ओर से एक छिलका-सा चढ़ा रहता है। पृथ्वी की पपड़ी भी ठीक अण्डे के छिलके ही के समान है। जिस प्रकार अण्डे को छीलने पर उसके भीतर पीले रंग का एक विशेष पदार्थ दिखाई पड़ता है, उसी प्रकार पृथ्वी की पपड़ी के भीतर भी गहरे रंग के पत्थरों की तह है। लोगों का कहना है, कि पत्थरों की यह मोटी तह पृथ्वी के भीतर ७५० मील तक फैली हुई है। उसके बाद हरे-हरे रंग का एक विशेष पदार्थ होता है, जो बहुत ही गर्म होता हैं। तुम्हें पृथ्वी की भीतरी गर्मी का भले ही पता न हो, पर खान खोदने वालों ने उस भयानक गर्मी का अनुभव किया है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा, कि गर्मी की अधिकता ही के कारण अभी तक लोग केवल दो मील गहरी खानें खोद सके हैं। तेल की खोज करने वालों ने भी, यंत्र से पृथ्वी के भीतर चार मील गहरा छेद करके उसकी भीतरी गर्मी का अनुभव किया है।"

मनोहर ने प्रश्न किया—"पर पृथ्वी की भीतरी गर्मी से भूडोल का क्या सम्बन्ध है ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"बहुत-बड़ा संबंध है। तुम किसी बहुत-बड़े चूल्हे के भीतर कोयला जला दो, और चूल्हे के ऊपर तवा रख दो। जब आग धधक कर जलने लगे, तो उसमें पानी डाल दो। क्या ज़ोर की भाप न उठेगी और उससे यह न होगा, कि तवा काँप उठेगा ?"

किशोर बोल उठा—"क्यों नहीं, अवश्य काँप उठेगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टरजी ने कहा—"बस, यही कारण भूडोल के आने का भी है। पृथ्वी के भीतर बहुत अधिक गर्मी है। समुद्र का पानी, जब कभी उस जगह पहुँचता है, जहाँ गर्मी अधिक होती है, तो बड़े ज़ोर का धड़ाका-सा होता है, और चट्टानें काँप उठती हैं। चट्टानों के काँपने से पृथ्वी भी काँप उठती है। यही कारण है, कि भूडोल उन देशों में अधिक आता है, जो समुद्र के आस-पास हैं। पर कभी-कभी ऐसी जगहों में भी भूडोल आता है, जो समुद्र से दूर होती हैं। पर जहाँ भी भूडोल आता है, पृथ्वी की भीतरी गर्मी में पानी पहुँचने के ही कारण आता है।

कुछ लोग भूडोल आने का कारण पृथ्वी का सिकुड़ना भी बताते हैं।

लोगों का कहना है, कि एक साल में दस लाख भूडोल आ सकते हैं। पर सभी भूडोल ऐसे नहीं होते, कि उनमें बहुत धन-जन की हानि हो।"

किशोर बोल उठा—"और ऐसे भूडोल न आयें, तो अच्छा ही हो।"

मास्टरजी ने कहा—"हाँ, बात तो ठीक है। पर कभी-कभी ऐसे भूडोल आ ही जाते हैं, जिनसे धन-जन की बहुत हानि होती है।

१९५७ ई० की २२ मार्च को सान फ्रांसिस्को में ऐसा ही भूडोल आया था। बत्तीस घंटों में सड़सठ बार भूडोल के धक्के लगे थे।

भूडोल के धक्कों से पृथ्वी फट गई थी। दूकानों में अलमारियों में रक्खे हुए डिब्बे नीचे गिर पड़े थे। खिड़कियाँ टूट गई थीं; और मकान झूमने लगे थे। गिरजा-घर के घंटे अपने-आप बज उठे थे। हमारे देश में भी एक बार बिहार में भयानक भूडोल आया था। पृथ्वी फट गई थी। भीतर से अपने ही आप गरम पानी के सोते फूट पड़े थे।"

किशोर के भीतर से एक लम्बी साँस-सी निकल पड़ी। ऐसा लगा, मानो मास्टर साहब की बात सुनकर वह भयभीत हो उठा हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टरजी ने किशोर की ओर देखते हुए कहा—"पर घबड़ाओ नहीं, किशोर ! ऐसा भूचाल आज नहीं आने का है । क्योंकि अभी शेषनाग थके नहीं हैं ।"

मास्टरजी की बात सुनकर सभी विद्यार्थी हँस पड़े । पर उन्हें यह बात तो समझ में आ ही गई, कि भूडोल शेषनाग के साँस लेने से नहीं आता ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: ११ :

इन्द्र का वज्र

जाड़े के दिन थे, और शाम का समय। आकाश में बादल छाए हुए थे। हवा धीरे-धीरे चल रही थी। यद्यपि जाड़ा ज़ोर का था, पर फिर भी पाठघर की कक्षा भरी हुई थी। सभी विद्यार्थी, बड़े ध्यान से अपनी-अपनी पुस्तक पढ़ रहे थे।

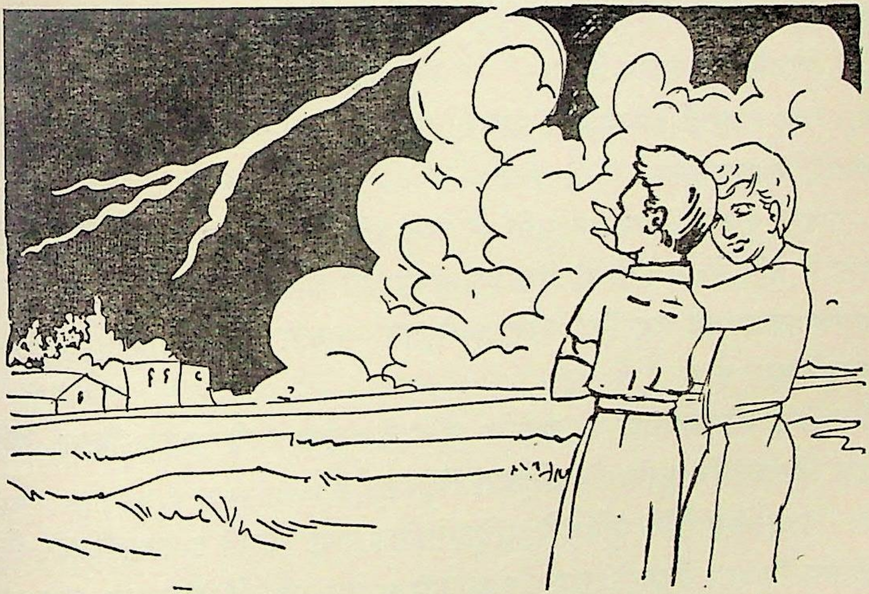

सहसा बिजली चमक उठी, और उसके कुछ क्षणों बाद ही ऐसी गड़-गड़ाहट हुई कि सबके सब चौंक पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टर साहब विचारमग्न हो उठे। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर अपने ही आप बोल उठे—"तुम लोगों ने भी तो उस गड़गड़ाहट को सुना ही होगा, जो अभी हुई है। क्या तुम में से कोई यह बता सकता है, कि यह क्या चीज़ थी ?"

सुखवीर ने उत्तर दिया—"लगता है, कहीं बिजली गिरी है। जब बिजली गिरने को होती है, तो इसी प्रकार की गड़गड़ाहट होती है।"

मास्टरजी ने कहा—"बात तो तुम ठीक कहते हो। पर क्या तुम यह भी बता सकते हो, कि बिजली क्या चीज़ होती है ?"

सुखवीर ने कुछ उत्तर न दिया, पर रामसिंह बड़े उत्साह के साथ बोल उठा—"मैं बता सकता हूँ। बिजली इन्द्र का वज्र है।"

मास्टरजी ने आश्चर्य के साथ कहा—"इन्द्र का वज्र ! कैसा इन्द्र का वज्र ?"

रामसिंह ने उत्तर दिया—"मैंने एक कहानी पढ़ी थी। इन्द्र स्वर्ग के राजा का नाम है। एक बार राक्षसों ने स्वर्ग पर चढ़ाई की; और इन्द्र लड़ाई में हार गया।

इन्द्र दुःखी होकर एक मुनि के पास पहुँचा। उसका नाम दधीचि था। इन्द्र ने मुनि से प्रार्थना की, कि अगर वह उसे अपनी हड्डियाँ दे दे, तो वह उनका वज्र बना कर फिर राक्षसों से लड़ सकता है और उन्हें लड़ाई में हरा सकता है।

इन्द्र की प्रार्थना पर दधीचि मुनि ने अपना शरीर छोड़ दिया, और इन्द्र को दधीचि मुनि की हड्डियाँ मिल गईं।

इन्द्र ने दधीचि मुनि की हड्डियों का वज्र बनाकर राक्षसों पर फिर हमला किया। बहुत-से राक्षस मारे गए। पर राक्षसों का राजा वृत्र भाग कर पाताल में चला गया, और छिप गया।

इन्द्र तब से लेकर आज तक वृत्र को मारने के लिए बराबर वज्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छोड़ते रहते हैं। जब भी वे वज्र छोड़ते हैं, बड़े ज़ोर की गड़गड़ाहट होती है।"

रामसिंह की बात सुनकर सभी विद्यार्थी आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे, और उसकी बुद्धि की मन-ही-मन प्रशंसा करने लगे।

पर मास्टर साहब बोल उठे—"रामसिंह! तुम्हारी कहानी है तो बहुत अच्छी; पर यह बात सही नहीं है, कि बिजली इन्द्र का वज्र है, और इन्द्र किसी राक्षस को मारने के लिए उसे छोड़ता है।"

सभी विद्यार्थी विस्मित-से हो उठे।

रामसिंह बोल उठा—"यदि हमारी कहानी सही नहीं है, तो आप ही बताइए, कि बिजली क्या चीज़ है, और गड़गड़ाहट क्यों होती है ?"

मास्टर साहब ने कहा—"क्या कभी ऐसा भी हुआ है, कि आकाश में बादल न रहे हों, और तुम्हें बिजली की चमक दिखाई देने के साथ-ही-साथ उसकी गड़गड़ाहट भी सुनाई पड़ी हो ?"

रामसिंह ने उत्तर दिया—"नहीं, ऐसा तो कभी नहीं हुआ।"

मास्टरजी ने कहा—"तो अवश्य बिजली की चमक और उसकी गड़-गड़ाहट का सम्बन्ध बादलों से ही है।"

सुखवीर ने प्रश्न किया—"पर वह किस तरह ?"

मास्टरजी ने उत्तर दिया—"पहले यह समझो, कि बिजली क्या चीज़ है, फिर यह भी बतायेंगे, कि गड़गड़ाहट क्यों होती है ? अगर तुम किसी कालीन पर ज़ोर से अपने पैरों को रगड़ो, और उसके बाद धातु की बनी हुई चाभी को हाथ से छुओ, तो तुम्हें एक हल्का-सा धक्का लगेगा। जानते हो वह हल्का धक्का किस चीज़ का है ? बिजली का। यही बात उस बिजली के बारे में भी है, जिसे तुम आकाश में चमकती हुई देखते हो। आकाश में जब बादल छाये रहते हैं, और छोटी-छोटी बूँदें गिरती रहती हैं, तो उनमें आपस में टकराव होता है, और टकराव से बिजली पैदा होती है। पर यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिजली केवल किसी एक जगह पैदा नहीं होती । क्योंकि बादल एक ही जगह नहीं होते, और बूँदें भी एक जगह नहीं गिरतीं । आकाश में जहाँ कहीं भी बूँदों में टकराव होता है, बिजली पैदा होती है । बिजली पैदा होते ही एक ओर से दूसरी ओर को खिंचती है, और तेज़ी से हवा को पार करती हुई एक-दूसरे से मिलती है । दोनों के मिलने से एक चमक-सी पैदा हो जाती है । वही चमक हमें-तुम्हें दिखाई पड़ती है, और हम-तुम उसे बिजली का चमकना कहते हैं ।"

रामदरश बोल उठा—"और गड़गड़ाहट क्यों होती है ?"

मास्टरजी ने कहा—"तुम यह तो समझ ही गए, कि बिजली पैदा होने पर उसकी लहरें आकाश में दौड़ती हैं, और आपस में मिलकर हवा में चमक पैदा करती हैं । इसका परिणाम यह होता है, कि हवा बहुत गर्म हो जाती है, और बड़ी तेज़ी के साथ फैलने लगती है । फैलने के साथ-ही-साथ उसमें एक बहुत-बड़ी और तेज़ लहर भी पैदा हो उठती है । यही लहर हमें गड़गड़ाहट के रूप में सुनाई पड़ती है ।"

कैलाश ने पूछा—"पर इसका क्या कारण है, कि बिजली की चमक तो हमें पहले दिखाई पड़ती है, और गड़गड़ाहट बाद में सुनाई पड़ती है ?"

मास्टरजी ने कहा—"इसका कारण है प्रकाश की चाल । प्रकाश की चाल आवाज़ की चाल से तेज़ होती है ।

तुम इस बात को जान चुके हो, कि प्रकाश एक सेकिण्ड में १,८६,००० मील की दूरी को पार करता है। पर आवाज़ की गति केवल पाँच सेकिण्ड में एक मील है ।

फिर तो यह बात तय है, कि हमें आवाज़ से चमक पहले दिखाई पड़ेगी ।"

मास्टरजी की बात खतम होते ही बिजली चमक उठी, और थोड़ी देर बाद गरज भी सुनाई पड़ी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टर साहब बोल उठे—"लो, तुम लोगों को समझाने के लिए फिर बिजली चमक के साथ-ही-साथ कड़कड़ा उठी है। अब तो शायद तुम लोगों को यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई होगी, कि बिजली की चमक के बाद, उसकी गड़गड़ाहट उसके बाद क्यों सुनाई पड़ती है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

: १२ :

इन्द्र का कोप

बरसात के दिन थे। आसमान पर बादल छाए हुए थे, और पानी बरस रहा था।

रामदरश भीगता हुआ, पाठ घर पहुँचा। यद्यपि उसने छाता लगा रखा था, पर फिर भी उसके कपड़े भीग गए थे।

वह पाठ घर में, अपना छाता बन्द करके उसे एक किनारे पर रखकर, अपने स्थान पर जा बैठा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किशोर बोल उठा—"तुम तो भीग गए हो, रामदरश !"

रामदरश ने उत्तर दिया—"हाँ, भाई ! भीग गया हूँ। बड़े ज़ोर से पानी बरस रहा है।"

आज कई दिनों से सूरज निकलने का नाम नहीं ले रहा है। जान पड़ता है, घर-द्वार सब बह जाएँगे।

किशोर बोल उठा—"हाँ, ऐसा ही जान पड़ता है। मेरे बाबा कह रहे थे, कि यह इन्द्र का कोप है !"

रामदरश ने आश्चर्य के साथ कहा—"इन्द्र का कोप ! यह इन्द्र कौन है किशोर ?"

किशोर ने उत्तर दिया—"अरे ! तुम इन्द्र को नहीं जानते ? इन्द्र ही के कारण तो पानी बरसता है ! इन्द्र जब नाराज़ हो जाता है, तो इतना पानी बरसता है, इतना पानी बरसता है, कि धरती पर चारों ओर पानी-ही-पानी हो जाता है। हमारे बाबा, 'इन्द्र के कोप' के बारे में एक कहानी भी सुनाते हैं।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ कहा,—"फिर मुझे भी सुनाओ, वह कहानी !"

किशोर कुछ देर तक चुप रहा। फिर बोल उठा—"पुराने ज़माने में, जब कृष्ण भगवान का बचपन था, उनके गाँव गोकुल में लोग इन्द्र की पूजा किया करते थे। पर श्रीकृष्ण को न जाने क्या सूझी, उन्होंने इन्द्र की पूजा बन्द करा दी। फिर क्या था ? इन्द्र नाराज़ हो गया। बादल गरजने लगे, और रह-रहकर मूसलाधार वर्षा होने लगी। ऐसा लगा, मानों सारा गोकुल डूब जाएगा। लोग दौड़-दौड़कर श्रीकृष्ण के पास गए, और रोने-पीटने लगे। श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पहाड़ को अपनी अँगुली पर उठा लिया, और लोगों से कहा, कि वे अपने बाल-बच्चों, और गाय-बछड़ों को लेकर गोवर्द्धन पहाड़ के नीचे आ जाएँ। लोगों ने श्रीकृष्ण की आज्ञा का पालन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया। कई दिनों तक पानी बरसता रहा। पर किसी का बाल भी बाँका न हुआ। श्रीकृष्ण के आगे इन्द्र की कुछ भी न चली। इन्द्र ने हार मान ली, और उसने श्रीकृष्ण के पास आ कर क्षमा माँग ली।"

रामदरश बोल उठा—"हाँ, कहानी तो अच्छी है; पर यह बात समझ में नहीं आती, कि इन्द्र के कोप के कारण पानी बरस रहा है। क्योंकि मास्टर साहब "इन्द्र के वज्र" की चर्चा में यह बता चुके हैं, कि बिजली का चमकना, और कड़कड़ाना, इन्द्र के कारण नहीं, बादलों के कारण होता है।"

किशोर ने रामदरश की बात का कुछ उत्तर न दिया। वह केवल रामदरश की ओर देख कर रह गया।

रामदरश पुनः बोल उठा—"सच, पानी इन्द्र के कोप के कारण नहीं बरसता। पर अगर तुम कहो, तो मास्टर साहब से पूछूँ?"

किशोर बोल उठा—"पूछो, सही बात का पता तो चल जाएगा।"

रामदरश उठ कर खड़ा हो गया, और बोल उठा—"मास्टर साहब! आज कई दिनों से ज़ोरों से पानी बरस रहा है। किशोर का कहना है, कि यह इन्द्र का कोप है। क्या यह सच है?"

रामदरश के प्रश्न ने सब बच्चों को उत्सुक-सा कर दिया। और सब बड़े ध्यान से मास्टर साहब की ओर देखने लगे।

मास्टर साहब तुरन्त ही बोल उठे—"और क्या किशोर ने इस सम्बन्ध में तुम्हें कोई कहानी-वहानी भी सुनाई है?"

रामदरश ने उत्तर दिया—"हाँ, श्रीकृष्ण और गोवर्द्धन पहाड़ की कहानी!"

मास्टर जी ने कहा—"तो फिर, तुम उस कहानी को दुहरा दो, जिससे दूसरे लड़के भी उस कहानी को सुन लें।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रामदरश ने श्रीकृष्ण और गोवर्द्धन पहाड़ की कहानी ज्यों-की-त्यों सब को सुना दी ।

कहानी सुनकर लड़के प्रसन्न हो उठे ।

पर मास्टर साहब बोल उठे—"कहानी अच्छी है, और उससे शिक्षा भी मिलती है; पर यह बात ठीक नहीं कि तेज़ वर्षा इन्द्र के कोप के कारण होती है ?"

सुखवीर ने उत्कंठा के साथ प्रश्न किया—"फिर आप ही बताएँ, तेज़ वर्षा क्यों होती हैं ?"

मास्टर साहब ने उत्तर दिया—"क्या बिना बादल के तुम लोगों ने पानी बरसता हुआ देखा है ?"

रामदरश ने कहा—"नहीं, ऐसा तो कभी नहीं हुआ ।"

मास्टर जी बोल उठे—"तो फिर ज़रूर वर्षा, और तेज़ वर्षा का सम्बन्ध बादलों से ही होगा । निश्चय ही वर्षा का सम्बन्ध बादलों से ही है । सूर्य की गर्मी से पानी भाप बन कर उड़ता है; और ठंडी हवा के कारण अगणित बूँदों की शक्ल धारण कर लेता है । आकाश में बूँदों की यही पंक्ति बादल कहलाती है ।"

किशोर बोल उठा—"पर बादल और तेज़ वर्षा का क्या सम्बन्ध है, मास्टर साहब ?"

मास्टर जी ने कहा—"बहुत बड़ा सम्बन्ध है । तुम यह तो जान ही गए, कि भाप से बादल बनता है । तुमने आकाश में तरह-तरह के बादलों को दौड़ते और चलते हुए देखा होगा ! सफेद, काले और मटमैले रंग के बड़े-बड़े बादल जब घुमड़-घुमड़ कर आकाश में गरजने लगते हैं, तो अनायास ही मन में एक डर-सा पैदा हो जाता है । पर इन बादलों के बनने का कारण केवल हवा और भाप का खेल है ।

जिस तरह हवा के बादल बनते हैं, उसी तरह हवा के ही कारण वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

फिर पानी की छोटी-छोटी बूंदों की शक्ल में गिरने लगते हैं। इस को हम सब लोग 'वर्षा' या बरसात कहते हैं। जिस तरह के बादल होते हैं, और जैसी हवा चलती है, उसी के अनुसार बरसात भी होती है। साधारण बादलों से हल्की वर्षा होती है, पर जब हवा के कारण काले-काले बादल छा जाते हैं, तो तेज़ पानी बरसता है।"

मनोहर ने प्रश्न किया—"यह बात तो समझ में आ गई, कि जिस तरह के बादल होते हैं; और जैसी हवा चलती है, उसी के अनुसार पानी भी बरसता है। पर इसका कारण क्या है, कि एक किसी दिन किसी जगह तो पानी बरसता है; पर दूसरी जगह बूंदें भी नहीं पड़तीं ?"

मास्टर साहब ने बतलाया—"इसका भी कारण हवा और बादल ही हैं। जहाँ तक हवा और बादल का प्रभाव पड़ता है, पानी बरसता है; और जहाँ नहीं पड़ता, वहाँ एक बूँद भी नहीं गिरती। हवा और बादल के ही प्रभाव से बरसात के दिनों में तेज़ वर्षा होती है। आजकल जो वर्षा हो रही है, उसका कारण सिर्फ हवा और बादल हैं।"

रामदरश बोल उठा—"फिर क्या श्रीकृष्ण और गोवर्द्धन पहाड़ की कहानी ग़लत है, मास्टर साहब ?"

मास्टरजी ने कहा—"कहानी ग़लत है या सही, यह कौन कह सकता है ? पर यह तो सत्य है कि तेज़ वर्षा का इन्द्र के कोप से कोई वास्ता नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भगवान का धनुष

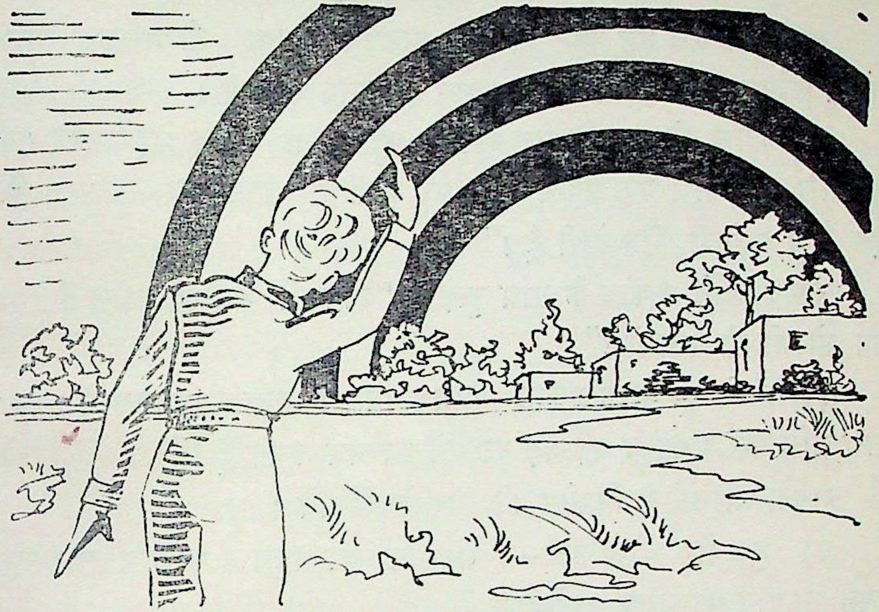

शाम के तीन-चार बज रहे थे। आकाश में बादल थे, पर बीच-बीच में सूर्य भी दिखाई पड़ जाता था।

अचानक आकाश में सतरंगी इन्द्र धनुष दिखाई पड़ गया—एक छोर से दूसरे छोर तक निरख उठा उसका सुन्दर रंग! किशोर देखते ही देखते वाह-वाह कर उठा, और उसके मुख से निकल पड़ा—"आकाश में धनुष, भगवान का धनुष!"

किशोर के वृद्ध दादा उसके पास ही मौजूद थे। किशोर की हाँ-में हाँ मिलाते हुए वह भी बोल उठे—"हाँ बेटा! यह भगवान का धनुष है। इसी धनुष से बाण चला कर भगवान बड़े-बड़े राक्षसों का वध करते हैं।"

किशोर की खुशी का ठिकाना न था। आज आकाश में उसने भगवान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का धनुष देखा है। पता नहीं, उसके साथियों में से किसी ने उसे देखा या नहीं! वह उनसे पूछेगा। उसके बारे में उनसे बात-चीत होगी।

सायंकाल जब वह पढ़ने के लिए पाठघर जाएगा, तो मास्टर साहब से भी कहेगा कि आज उस ने भगवान का धनुष देखा है।

और शाम को जब किशोर पाठघर पहुँचा, तो उसके चेहरे पर हर्ष-सा नाच रहा था। वह अपनी जगह पर बैठते ही बोल उठा—"आज मैंने एक बड़ी अनोखी चीज़ देखी है।"

रामदरश ने उत्कंठा के साथ पूछा—"कौन सी अनोखी चीज़? हम सब को भी तो बताओ।"

किशोर ने गर्व के साथ कहा—"भगवान का धनुष, वह धनुष, जिस पर बाण चला कर भगवान बड़े-बड़े राक्षसों का वध करते हैं।"

लड़के आश्चर्य से किशोर की ओर देखने लगे।

पर सुखवीर बोल उठा—"भगवान का धनुष! भला बताओ तो, तुमने भगवान का धनुष कहाँ देखा?"

किशोर ने उत्तर दिया—"आकाश में! बड़ा रंगदार था।"

रामदरश हँस उठा, और साथ ही बोल उठा—"अरे, वह इन्द्र धनुष! उसे भगवान का धनुष नहीं, इन्द्र-धनुष कहते हैं।"

किशोर ने ज़ोर देकर कहा—"पर वह भगवान का ही धनुष है। मेरे बाबा कह रहे थे, कि भगवान इसी धनुष से बाण चला कर बड़े-बड़े राक्षसों का वध करते हैं।"

किशोर की बात खत्म होते ही मास्टर साहब बोल उठे—धनुष बाण से "किसका वध कर रहे हो, किशोर?"

किशोर ने तो कुछ उत्तर न दिया, पर रामदरश बोल उठा—"किशोर कह रहा है, मास्टर साहब! कि आज उसने भगवान का वह धनुष देखा है, जिससे वे बाण चलाकर बड़े-बड़े राक्षसों का वध करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मास्टर साहब भी चकित हो उठे, और उनके मुख से आश्चर्य के साथ निकल पड़ा—"भगवान का धनुष !"

रामदरश ने कहा—"हाँ, मास्टर साहब, भगवान का धनुष, जिसे हम सब लोग इन्द्र-धनुष कहते हैं।"

मास्टर साहब मुस्करा उठे। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर अपने ही आप बोल उठे–"अवश्य, ही किशोर के बूढ़े दादा ने उसे यह बात बताई होगी।"

रामदरश ने कहा—"हाँ, मास्टर साहब, किशोर के दादा ने ही उसे बताया है, कि यह भगवान का धनुष है, और इससे बाण चला कर भगवान बड़े-बड़े राक्षसों का वध करते हैं।"

मास्टर साहब बोल उठे—"किशोर के दादा की यह बात भी वैसी ही है, जैसी कि 'इन्द्र के कोप' और 'इन्द्र के वज्र' वाली बात थी।"

सुखबीर ने उत्कंठा के साथ पूछा—"तो क्या इन्द्र धनुष भगवान का धनुष नहीं है ?"

मास्टर साहब ने उत्तर दिया—"बिल्कुल नहीं ! इन्द्र-धनुष और भगवान में कोई सम्बन्ध नहीं है।"

रामदरश ने प्रश्न किया–"यह ठीक है, कि इन्द्र धनुष भगवान का धनुष नहीं है। पर यह तो बतइए, कि वह क्या है, और क्यों दिखाई पड़ता है ?"

मास्टर साहब ने उत्तर दिया–-"इन्द्र धनुष के बनने का कारण बादल और सूर्य की किरणें हैं। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा, कि सूर्य की किरणों में उस तरह के रंगों को प्रगट करने का गुण है। क्या तुम लोगों ने आकाश में उस दिन भी इन्द्र-धनुष को प्रगट होते हुए देखा है, जब आकाश साफ होता है, और बादल बिलकुल नहीं होते ?"

रामदरश ने उत्तर दिया—"नहीं, जब भी इन्द्र-धनुष दिखाई पड़ता है, बादल अवश्य होते हैं।"

मास्टर साहब ने कहा—"पर इन्द्र-धनुष तुम्हें उसी समय दिखाई पड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होगा, जब पानी बरसने के साथ-ही-साथ, किसी ओर सूर्य भी कुछ-कुछ मौजूद रहता है। क्योंकि बिना सूर्य की किरणों के इन्द्र-धनुष नहीं प्रगट हो सकता। बरसते हुए पानी की फुहारों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो किरणों के प्रभाव से एक रंगदार पट्टी आकाश में चमक उठती है। उसी पट्टी को हम सब इन्द्र-धनुष कहते हैं। अगर तुम लोग चाहो तो स्वयं भी इन्द्र-धनुष बना सकते हो।"

सुखवीर बोल उठा—"पर किस तरह, मास्टर साहब ?"

मास्टर साहब ने कहा—"सोडा वाटर की एक बोतल लो, और उसे साबुन के पानी में इस तरह डुबाओ, कि उसके मुँह पर एक झिल्ली-सी चढ़ जाए। अब उसे चमकते हुए सूर्य की ओर रक्खो। तुम आश्चर्य के साथ देखोगे, कि तुम्हें उसके भीतर इन्द्र धनुष केरंग दिखाई पड़ रहे हैं। इसी प्रकार तुम फव्वारों में भी इन्द्र-धनुष वे रंगों को देख सकते हो और देखकर स्वयं सोच सकते हो, कि इन्द्र धनुष से भला भगवान का क्या सम्बन्ध है।"

रामदरश बोल उठा—"इससे तो यही कहना पड़ेगा, कि कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

मास्टर साहब ने कहा—"हाँ, कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इन्द्र-धनुष केवल सूर्य और पानी की बरसती हुई फुहारों के कारण बनता है। और तुमने यह देख ही लिया, कि तुम भी किस तरह इन्द्र-धनुष के रंगों को प्रगट कर सकते हो। अच्छा होता, किशोर अपने दादा जी के सामने सोडा वाटर की बोतल में इन्द्र धनुष के रंगों को प्रगट करके उन्हें दिखाता।"

किशोर ने कुछ उत्तर न दिया, पर उसके चेहरे से यह बात प्रगट हुए बिना न रही, कि वह अवश्य अपने दादा के सामने सोडा वाटर की बोतल में इन्द्र-धनुष के रंगों को प्रगट करेगा।

और उन्हें दिखाकर कहेगा, कि इन्द्र-धनुष के बनने में भगवान का कोई हाथ नहीं है।

Library

◇ ◇ ◇

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.